Publication date- 5th April 2025, Posting date- 9/10th April 2025. Place of posting- Naraina
संख्या No. U (W)-11/2024-26
RNI No. DELBIL/2005/16236 | Postal Regn. No. DL (W) 10/2129/24-26

RNI No. DELBIL/2005/16236

श्रद्धा सबूरी

श्री साई सुमिरन टाइम्स

मासिक समाचार पत्र

वर्ष-21 अंक-7 नई दिल्ली अप्रैल 2025 वार्षिक मूल्य 700 रू. (प्रति कॉपी 60 रू.) पृष्ठ-16

साई मंदिर रोहिणी में नवरात्र पर माता की चौकी

दिल्लीः सुप्रसिद्ध शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में दिनांक 30 मार्च से 6 अप्रैल 2025 तक नवरात्रि त्यौहार धूमधाम से मनाया जा रहा है। हर वर्ष की तरह इस अवसर पर पूरे मंदिर को फूलों, गुब्बारों

और रंग बिरंगी लाईटों से अति सुंदर सजाया गया। पहले नवरात्रे पर दिनांक 30 मार्च को मंदिर में 7:30 बजे से रात 11 बजे तक माता की चौकी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर के हाल में माता का खूबसूरत दरबार सजाया गया। महामाई निष्काम सेवा सभा के कलाकारों ने माता की मधुर-मधुर भेंटे सुनायी। भक्तों ने तालियां बजा कर अपनी हाज़री लगाई और कई भक्तों ने भजनों पर खूब नृत्य भी किया। भजनों के अंत में माता की आरती की गई और उसके पश्चात् बाबा की शेज आरती के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। सभी भक्तों को फल एवं खीर प्रसाद बांटा गया।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता व श्री विमल शर्मा द्वारा बखूबी किया गया। **-कृष्णा**

साई धाम हौज़खास में नवचंडी यज्ञ

दिल्लीः दिनांक 30 मार्च से 6 अप्रैल 2025 तक साई धाम मंदिर, हौज़खास में नवरात्रों के दौरान विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 9 कलशों की स्थापना की गई। जिसका प्रतिदिन पूजन किया गया और इस दौरान नवचंडी यज्ञ भी किया गया जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। मंदिर में नवरात्रों के दौरान प्रतिदिन भक्तों का आना-जाना लगा रहा। कार्यक्रम का आयोजन मुख्य ट्रस्टी आदरणीय श्री नरेन्द्र मिश्रा जी के कुशल नेतृत्व में सभी पुजारीयों, सेवादारों एवं साई धाम के सभी भक्तों के सहयोग से किया गया। **-कृष्णा पुरी**

देव नगर साई मंदिर में होली मिलन

दिल्लीः दिनांक 10 मार्च 2025 को प्राचीन साई धाम मंदिर, देव नगर, करोल बाग में महिला मंडल के सदस्यों द्वारा बाबा के संग होली मिलन का पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इसमें बड़ी संख्या में महिला सदस्य उपस्थित थी। सब महिला सदस्यों द्वारा भजन और मनोरंजक गीतों का गुणगान किया गया जिसका सब सदस्यों ने भरपूर आनन्द लिया। सभी लोगों ने एक दूसरे पर फूलों की वर्षा करके मस्ती की और एक दूसरे को चन्दन लगाकर खूब होली खेली। 3-4 घंटे तक ये प्रोग्राम चला। आरती के बाद प्रोग्राम के अन्त में सबको गुजिया, फल और बिस्कुट का प्रसाद वितरित किया गया। बाबा के संग धूम-धाम से होली पर्व सम्पन्न हुआ और सबको बाबा का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। **-मंजु पालीवाल**

साई धाम फरीदाबाद में रक्तदान शिविर

फरीदाबादः दिनांक 23 मार्च, 2025 को शिरडी साई बाबा टैम्पल सोसायटी, साई धाम, सैक्टर 86 में अग्रवाल वैश्य समाज फरीदाबाद व शिरडी साई बाबा टैम्पल सोसायटी के संस्थापक डा. मोतीलाल गुप्ता के मार्ग दर्शन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 40 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में नवनिर्वाचित पार्षद् मुकेश अग्रवाल व प्रमुख समाज सेवी पंकज सिंघला, करण गोयल, महावीर गोयल, शीतल जैन का शिविर संयोजक केदारनाथ अग्रवाल, के. ए. पिल्ले, प्रधानाचार्या बीनू शर्मा, सी.के. मिश्रा, रतन मुंशी, विकास मल्होत्रा, नरेन्द्र जैन, सामलिया गुप्ता, हरिओम अग्रवाल, नीरा गोयल, ने अंगवस्त्र पहनाकर सम्मान किया। श्री केदार नाथ अग्रवाल ने सभी रक्तदाताओं व अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि आगे भी इसी तरह रक्तदान शिविर लगाए जाते रहेंगे। शिविर के आयोजन में पियूष गोयल, गोपाल गोयल, राजन गुप्ता, प्रमोद शर्मा, शिवम दीक्षित आदि का सराहनीय सहयोग रहा। शिरडी साई बाबा स्कूल के शिक्षकों के साथ छात्रों और उनके अभिभावकों ने भी शिविर में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और रक्तदान किया। **-के.ए. पिल्ले**

साई बाबा हमारे साथ थे

जनवरी का महीना था। हमारा बेटा, नीरव, जो अमरीका में डॉक्टर है, एक दशक के बाद, अपने बेटे, डॉ समीर और पत्नी, डॉ अनिशा के साथ भारत आया था। उसका एक ही मकसद था, माता-पिता के साथ तीर्थ यात्रा करना। मेरी पत्नी, भारती इस योजना से बहुत उत्सुक थी लेकिन मुझे, अपने दूर तक ना चल पाने की समस्या के कारण थोड़ी चिंता थी। दरअसल, मैं इस सुंदर योजना में खलल नहीं डालना चाहता था। पर बेटे के बहुत आग्रह करने पर मैं जाने के लिए राज़ी हो गया, और हम दोनों पति पत्नी, उत्सुकता से तैयारी करने लगे। क्या ही अच्छा हुआ की बाबा ने मुझे इस यात्रा पर भेज दिया क्योंकि हम सबको उनकी कृपा से अद्भुत अनुभव प्राप्त हुए। प्रयागराज में तो एक अनूठा अनुभव हुआ। हम वृंदावन में बाँके बिहारी के दर्शन करके सड़क मार्ग द्वारा ही इलाहबाद यानि प्रयागराज के लिए निकले थे। सफर लंबा था और वहाँ पहुँचने से पहले मेरी पत्नी, भारती को शौचालय के प्रयोग की आवश्यकता लगी। पर कहीं कोई शौचालय नहीं दिखा। धीरे धीरे प्रयागराज के पास वाहनों की संख्या बढ़ने लगी और सभी की गति धीमी पड़ गई। भारती बेचैन हो उठी और उसने गाड़ी की खिड़की से देखा कि उसकी साइड पर एक अस्पताल है। वह बच्चों की तरह मचल उठी और बोली, नीरव गाड़ी रुकवाओ। मुझे वाशरूम जाना है, अस्पताल में होगा। बेटा थोड़ा झिझका क्योंकि वहाँ अंदर जाने की अनुमति शायद ना मिलती। इतने में गाड़ी भीड़ के कारण स्वयं ही थम गई और भारती झटपट उतर कर अस्पताल की ओर चल पड़ी। पीछे पीछे नीरव भी दौड़ा पर अंदर पहुंचते ही दोनों सब कुछ भूल गए और वहीं थम गए। द्वार के ठीक सामने साई बाबा की सुंदर प्रतिमा मुस्कुराते हुए सभी आगंतुकों को निहार रही थी। बाबा मुस्कुरा रहे थे और उनका हाथ आशीर्वाद में उठा हुआ था। भारती अचंभित हो गई और -शेष पृष्ठ 3 पर

सम्पादकीय

दोस्तां दुनिया में हर इंसान को कोई ना कोई दुख ज़रूर होता है। अपने दुखों से छुटकारा पाने का सबसे सरल तरीका है कि अपना ध्यान बाबा में लगाओ, बाबा की जीवन लीलाओं का पठन करो, भजन कीर्तन में जाओ। जब हम बाबा की बातें करते हैं या भजन में जाते हैं तो कुछ समय के लिए अपने दुख भूल जाते हैं और हमारा मन शान्त हो जाता है। अगर हमारे दुख दूर नहीं होते तो बाबा हमें दुखों को सहने की शक्ति देते हैं। वैसे तो दुख सुख हमारी मानसिक स्थिति पर ज़्यादा निर्भर करते हैं। बाबा के चमत्कार पढ़कर भी हमें प्रेरणा मिलती है कि अगर किसी भक्त का दुख बाबा दूर कर सकते हैं तो हमारे भी कर सकते हैं। अगर हम श्रद्धा से बाबा को पुकारें तो बाबा अपने भक्तों की मदद करने ज़रूर आते हैं। कई बार बाबा हमारी पुकार एकदम सुनते हैं और कई बार बाबा कुछ समय बाद हमारी मनोकामना पूरी करते हैं। तब बाबा हमारी सबूरी देखते हैं और कई बार बाबा हमारी इच्छा पूरी नहीं करते तो यह समझ लेना चाहिए कि हमारी इसी में भलाई है। अगर हमें बाबा पर पूरा विश्वास है तो हमें यह भी मानना होगा कि बाबा जानते हैं कि हमारे लिया क्या सही है। अगर हम अपने आप को बाबा को समर्पित कर दें और ये मानकर चले कि जो भी बाबा करेगें वही हमारी लिए उपयुक्त है तो हम सुख दुख के भाव से परे हो जाऐंगे, हमारा मन हर हाल में शान्त रहेगा और हम बाबा का आशीर्वाद हर पल महसूस कर सकेंगे। श्री साई सुमिरन टाइम्स बाबा के भक्तों को बाबा के करीब लाने के लिए प्रयत्नशील है। आप सबका सहयोग प्यार मिलता रहे तो हमारा ये सफर जारी रहेगा। **-अंजु टंडन**

श्रद्धांजलि

दिनांक 19 मार्च 2025 को बाबा के परम भक्त श्री परेश पटेल के पिताजी श्री अशोक भाई धनजी भाई पटेल सदा के लिए प्रभु के चरणों में लीन हो गये। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से बाबा से दुआ करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके पुत्र परेश पटेल, पुत्री रंजन पटेल, रीता पटेल, पौत्र प्रीत पटेल, श्वेता पटेल और उनके समस्त परिवार को इस सदमें को सहने की शक्ति दें। **-अंजु टंडन**

बाबा के सहारे मेरा जीवन

ओम साई राम। मैं मिर्ज़ापुर में रहता हूं। मेरा जीवन बाबा को समर्पित है। बाबा की कृपा को मैंने हर पल महसूस किया है। बात नवम्बर 2015 की है, मैं जहां नौकरी करता था वहां का माहौल अच्छा नहीं था, मुझे वहां अच्छा नहीं लगता था। एक दिन परेशान होकर मैंने वो नौकरी छोड़ दी। उसके बाद एक साल तक मेरे पास कोई काम नहीं था। वो साल मैंने केवल बाबा की सेवा में बिताया।

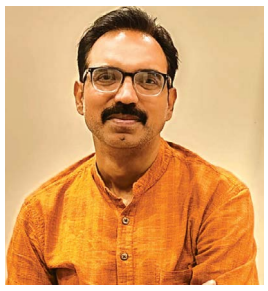

हैरानी की बात ये है कि ये इस एक साल में मेरे हालात नौकरी करने के समय से भी बेहतर थे और हमने इस दौरान जो खाना खाया वो इतना अच्छा था कि नौकरी करते हुए भी ऐसा खाना नहीं खाया था। उसी दौरान की बात है, मेरी बेटी आस्था घर के मंदिर में पूजा कर रही थी तभी उसको एक रोशनी दिखाई दी और उसे बाबा के दर्शन हुए, बाबा ने सफेद वस्त्र पहने थे और उसे आशीर्वाद दे रहे थे। वो चौक गई और उसने अपनी मम्मी को बताया। हम सब भाग कर वहां पंहुचे तो वहां कुछ नहीं था। बाबा ने जिसे दर्शन देने होते हैं उसे ही देते हैं। फिर हमने वहां अगरबत्ती जलाई और बहुत देर तक भजन किए। उसके बाद मैंने एक दो जगह छोटी-मोटी नौकरी की लेकिन मैं बहुत खुश नही था।

मैं बहुत परेशान था। मुझे लगा कि बाबा के पास शिरडी जाना चाहिए। मैं शिरडी पहुंच गया। मेरे पास रहने की कोई व्यवस्था नहीं थी। हमारे एक जानने वाले का वहां एक होटल किंगडम है। मैं उनके होटल में रूक गया। मैंने उन्हें अपनी परेशानी के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि बाबा 72 घंटे में एक बार द्वारकामाई में ज़रूर आते हैं इसलिए तुम 74 घंटे तक द्वारकामाई में जाते रहो। मैं लगातार 2 रातें द्वारकामाई में बैठा और मैं रोज़ द्वारकामाई और समाधि मंदिर की परिक्रमा दिन में 11-12 बार करता था। तीसरे दिन मैं बहुत थक गया था। मैंने रात 8 बजे 11 बजे का अलार्म लगाया कि मैं 11 बजे उठकर द्वारकामाई में जाकर बैठ जाऊंगा। मैं अलार्म लगाकर सो गया। कब अलार्म बजा मुझे पता ही नहीं चला। मेरी नींद सुबह 8 बजे खुली। मैंने सोचा कि बाबा की यही मर्ज़ी होगी। मैंने सोचा कि अब मुझे वापस घर चले जाना चाहिए। मैंने स्लीपर क्लास की टिकट लेनी की कोशिश की पर मुझे टिकट नहीं मिली। मैंने जब अपने मित्र को इस बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि बाबा चाहते हैं कि तुम एक दिन और शिरडी में रहो। मेरे पास 2800 रूपये थे। मैंने अगले दिन अपने मित्र जिनके होटल में रह रहा था उनके बेटे से टिकट बुक कराने को कहा। उसने मेरी टिकट बुक करवा दी। मैं स्लीपर क्लास की टिकट लेना चाहता था पर उसने मेरे लिए 3rd ए.सी. की टिकट बुक कर दी। मैं सोच रहा था कि मेरे पास जितने पैसे हैं उसमें से कैसे मैं टिकट के पैसे और होटल में रहने के पैसे दे सकूंगा पर बाबा की कृपा से सब हो गया। हम क्या चाहते हैं पर बाबा हमारे लिए हमेशा अच्छा ही करते हैं।

उन्हीं दिनों मेरा एक मित्र जो अमेरिकन कम्पनी में वाइस प्रेज़िडेंट था उसने मिर्ज़ापुर में अपना काम शुरू किया। मैंने उससे अपनी नौकरी के लिए बात की। उन्हें ज़रूरत तो नहीं थी पर बाबा ने जब व्यवस्था करनी हो तो ज़रूरत अपने-अपने पैदा हो जाती है और बाबा की कृपा से वहां मुझे बहुत अच्छी नौकरी मिल गई। मैं बाबा का बहुत शुक्रगुज़ार हूं। ओम साई राम। **-अरूण मिश्रा,** मिर्जापुर

तेल के डिब्बे और बाबा की उदारता

एक बार आई के घर में बाबा के मंदिर के लिए तेल पर्याप्त मात्रा में नहीं था। इसलिए, उन्होंने मास्टर जी से कहा कि स्कूल से लौटते समय में वे बाज़ार से थोड़ा तेल लेते आए। यह उन दिनों की बात है जब वे लोग भयंकर आर्थिक तंगी में से गुज़र रहे थे। वह महीने की चौथी तारीख थी और तब तक मास्टर जी को वेतन भी नहीं मिला था।

आई ने मास्टरजी से यूं ही कह दिया, 'देखिए, हर बार तेल के लिए हम भक्तों के दान पर निर्भर करते हैं। क्यों न इस महीने हम थोड़ा पैसा खर्च करें और खुद ही तेल ले आएं? अगर अभी आपके पास पैसे न हों तो उधार ही लें आइयेगा।'

स्कूल से लौटते समय मास्टरजी बाज़ार गए और एक दुकानदार से पूछा कि क्या वह तेल का बड़ा वाला टिन उधार पर दे सकता है। वह टिन 300 रूपए का था। मास्टरजी ने महीने के आखिर तक उधार देने का अनुरोध किया। दुकानदार मान गया और उसने उधार में वह टिन दे दिया। मास्टरजी ने टोकन स्वरूप उसे चवन्नी दी और टिन लेकर वे घर आ गए।

घर पहुंच कर वे कुछ व्यंगात्मक स्वर में बोले, 'लो, मैं तेल ले आया हूं। मुझे इसके लिए 300 रूपए भरने पड़ेंगे।' आई को उनका स्वर अच्छा नहीं लगा और उनसे पूछा, 'आप इस तरह क्यों बोल रहे हैं? इतने साल तक आपने अपनी जेब से एक भी पैसा खर्च नहीं किया है, न तो तेल पर और न ही अगरबत्तियों या फूलों पर, तो आप आज इस तरह से क्यों बोल रहे हैं?' मास्टरजी ने तुरंत क्षमा मांगते हुए कहा, 'अरे, अरे, माफ करना, मेरा यह मतलब नहीं था। लेकिन इस महीने के आखिर तक मुझे 300 रूपये चुकाने होंगे।' आई बोली, 'नहीं, नहीं, यह ठीक बात नहीं है, बाबा को यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगेगी, 300 रूपए चुकाने वाली बात तो ठीक है लेकिन आप बात का बतंगड़ क्यों बना रहे हैं?' मास्टरजी बोले, 'क्योंकि ये 300 रूपए हमारे उस बजट में से कटने वाले हैं जो कि पहले से ही तंग चल रहा है। क्या मैं गलत कह रहा हूं?' आई ने मास्टरजी को यह कहते हुए चुप करा दिया, 'हमारा बजट पहले से ही तंग है, हम पहले से ही भूखे हैं, प्यासे हैं, हमारी आवश्यकताऐं खत्म होने का नाम नहीं ले रही हैं। कहीं तो हमको रूकना ही पड़ेगा।'

अगले दिन मास्टरजी रोज़ाना की तरह स्कूल गए। अजीब बात यह हुई कि दिन में बुलेट मोटरबाइक पर सवार बड़ी उमर का रौबदार किस्म का एक आदमी उनके घर आया और मास्टरजी के बारे में पूछा, 'वे सज्जन कहां हैं जो लोगों का भविष्य पढ़ते हैं?' 'वे तो स्कूल गए हैं और लगभग 2 बजे तक लौटेंगे,' आई ने कहा। आगंतुक ने कहा, 'नहीं, नहीं, वे अभी आ रहे हैं।' यह सुनकर आई को अचंभा हुआ और बोलीं, 'अभी वे कैसे आ सकते हैं? स्कूल की छुट्टी 1:30 बजे होती है। फिर वे बस पकड़ेंगे और तब घर आयेंगे।' 'नहीं, नहीं, वे अभी आ जायेंगे,' उस बुज़ुर्गवार ने एक बार फिर विश्वासपूर्वक कहा। और उस दिन हुआ भी ऐसा ही। मास्टरजी जल्दी घर आ गए क्योंकि परीक्षाएं शुरू हो गई थीं और स्कूल रोज़ाना के मुकाबले जल्दी बंद हो गया था। आई को दूर से वे आते हुए दिखाई भी पड़े। उस बुज़ुर्ग ने आई से ज़ोर से कहा, 'लीजिए, वे आ गए।'

मास्टरजी के घर आ जाने पर वह उठ खड़ा हुआ और उनको अपना परिचय दिया। आई उसके लिए चाय ले आई, और जैसे ही वे उस व्यक्ति से उसके आने के बारे में पूछने को थे कि तभी एक डाकिया 150 रूपये का मनीआर्डर लेकर आ पहुंचा जिसे बिहार से किसी मिश्रा जी ने भेजा था। साथ में लिखा था, 'यह पैसा बाबा को फूल और तेल अर्पित करने के लिए है।' मास्टर जी को कुछ पता नहीं था कि वह रूपये भेजने वाला कौन था लेकिन उन्होंने डाकिए को इनाम दिया, मनीआर्डर लाने का धन्यवाद दिया और फिर आकर उस आगंतुक के पास बैठ गए। वह बोला, मैं अपनी कुंडली आपको दिखाना चाहता हूं लेकिन मैं जल्दी में हूं क्योंकि मुझे अभी-अभी कहीं पहुंचना है। क्या मैं कल आ सकता हूं?' मास्टरजी ने अगले दिन उसकी कुंडली देखने के लिए हां कर दी और उसके लिए उन्होंने समय भी तय कर लिया। वह बुज़ुर्गवार जब चलने को हुआ तब उसने अपने बैग से एक लिफाफा निकाला और मास्टरजी को देते हुए बोला, 'यह पत्र मनाली के एक सज्जन का है। इन्हीं ने मुझे आपके बारे में बताया था और कहा था कि आपसे मिलने पर मैं यह लिफाफा आपको दे दूं।' फिर उस बुज़ुर्गवार ने उन्हें अभिवादन किया और चला गया।

मास्टरजी लिफाफे के अंदर रखे पत्र को पढ़ने को उत्सुक थे इसलिए उन्होंने उसे खोला। वे आश्चर्यचकित रह गए जब उन्होंने देखा कि उसमें कोई पत्र नहीं था बल्कि उसमें 700 रूपए थे। चकित-विस्मित अवस्था में उन्होंने वह राशि आई को दे दी। आई ने उन्हें नसीहत देते हुए कहा, 'आपने 300 रूपए खर्च किए और उससे कहीं ज़्यादा आपको वापस मिल गए। हमें अपने दिल को कभी इतना छोटा नहीं करना चाहिए। हम बाबा को दे क्या रहे हैं? हम तो उनसे बस लिए जा रहे हैं, क्योंकि एक बच्चा अपनी मां को भला क्या दे सकता है?'

आई के साथ अपनी कई मुलाकातों में, मैंने अक्सर देखा है कि वे बाबा के खिलाफ कभी कुछ नहीं सुन सकती हैं और उनके बचाव में खड़ी हो जाती हैं। अक्सर वह भक्तों से कहा करती हैं, 'अगर हम में कोई दोष, कोई नुक्स है तो जितना चाहें हम पर उंगली उठाइए, लेकिन बाबा के खिलाफ कभी कुछ मत बोलिए।'

-निखिल कपूलानी
आभार: साई बाबा और आई

साई ने मेरी सुन ली

हर बार की तरह इस बार भी बाबा का प्यारा सा आज का चमत्कार आप सबको बताना चाहती हूं।

मैंने अपने बेटे के गले में बाबा का छोटा सा लॉकेट डाला हुआ है। मेरा बेटा 2 साल का है। जब वो बाबा को कुछ बोलने लगा तो देखा कि गले में लॉकेट नहीं है। घर में सबसे पूछा तो पता चला कि हमारी हेल्पर नेहा को लॉकेट सीड़ियों में मिला था। नेहा ने उसे टेबल पर रख दिया था, पर बाद में फिर से वो खो गया। वो लॉकेट मैं शिरडी से बहुत साल पहले लायी थी। पहले मैंने अपने गले में डाला हुआ था फिर 2 साल पहले मैंने अपने बेटे शिवांग के गले में डाल दिया। मुझे बहुत दु:ख हो रहा था कि इतना पुराना प्यारा सा बाबा का लॉकेट गुम हो गया। शिवी भी प्यार से बोल रहा था बाबा प्लीज़ आप मिल जाओ प्लीज़ बाबा। हमने बहुत ढूंढा पर बाबा नहीं मिले। फिर अगले दिन जब नेहा आयी तो मैंने उसको बोला अगर तूने लॉकेट ढूंढ दिया तो तुझे आईसक्रीम खिलाऊंगी उस दिन भी लॉकेट नहीं मिला। फिर उसके अगले दिन जब मैं ऑफिस जाने लगी तब नेहा ने झाड़ू से बिस्तर के नीचे देखा तो वहां बाबा का लॉकेट मिल गया। मेरे लिए वो बस लॉकेट नहीं है वो मेरे बाबा ही हैं जो हमेशा बच्चे के साथ रहते हैं। थैंक्यू यू so much बाबा once again love you a lot, please हमारी पुकार सुनते रहना आगे भी। हमेशा की तरह मैंने बाबा से कहा था कि मेरा लॉकेट मिल गया तो मैं इसे publish करवाऊंगी और बाबा ने मेरी सुन ली। -साई की बेटी, **रीतिका**

बधाई हो बधाई

17 अप्रैल को सुषमा ग्रोवर व श्री दर्शन ग्रोवर को शादी की वर्षगांठ की हार्दिक बधाई।

27 अप्रैल को जीवन संदल व श्री अनिल संदल को शादी की वर्षगांठ की हार्दिक बधाई।

21 अप्रैल को ज्योति व चेतन को शादी की वर्षगांठ की हार्दिक बधाई।

श्री साई सुमिरन टाइम्स
की सदस्यता लेने के लिए जानकारी

भारत में वार्षिक मूल्य डाक द्वारा 700 रू. व कोरियर द्वारा 1000 रू.
आजीवन सदस्यता 11000 रू., विदेशों में वार्षिक मूल्य 2500 रू.

आप अपना सदस्यता शुल्क **Paytm, M.O.** या **QR Code** द्वारा या श्री साई सुमिरन टाइम्स के HDFC बैंक, खाता संख्या 01292000015826, IFSC: HDFC0000129 में Net banking या चैक से जमा कर सकते हैं। अथवा State Bank of India, खाता संख्या 35247638760, IFSC: SBIN0017413 में जमा कर सकते हैं। Ch/DD in F/o Shri Sai Sumiran Times. कृपया राशि जमा करने की सूचना अवश्य दें। आप अपना पता व फोन न. हमें email/whatsapp/sms या डाक द्वारा भेज सकते हैं। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, Hari Kunj Society, Hari Nagar, New Delhi - 110064.

Mob: 9212395615, 9818023070,
Email: saisumirantimes@gmail.com

नोट: इसमें विज्ञापन देने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

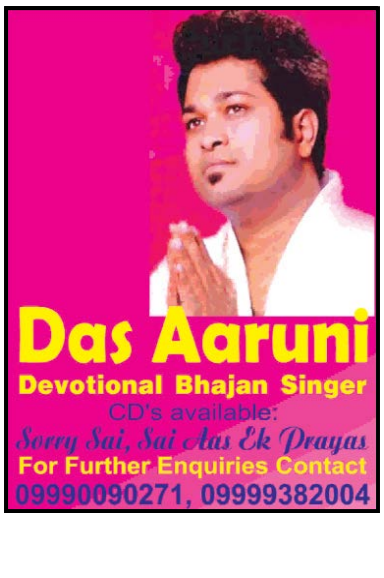

बाबा ही सबसे बड़े डाक्टर

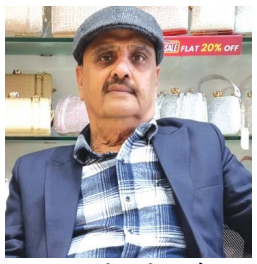

मेरा नाम हरीश माटा है। मैं लुधियाना में रहता हूं। हमारा Venson Shoes के नाम से कारोबार है और बाबा की कृपा से हमारा कारोबार बहुत अच्छा चल रहा है। पिछले कुछ महीनों से मेरी तबीयत खराब रहने लगी। मैं डिप्रेशन में चला गया था। मैंने कई डॉक्टरों को दिखाया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। एक दिन किसी ने मुझे बताया कि यहां साई बाबा का मंदिर है। जिसे साई द्वारकामाई धाम कहते हैं। उन्होंने बताया कि वहां पर बाबा साक्षात् विराजमान हैं। तुम भी वहां जाओ, बाबा ज़रूर कृपा करेंगे। मैं कभी मंदिर नहीं गया था। मैंने घरवालों को बताया तो वो मुझे साई द्वारकामाई धाम में ले गये। पंडित जी ने मुझे धुनी की विभूति लगाई। वहां दिन रात धुनि चलती रहती है। मैं लगातार 7 दिनों तक मंदिर जाता रहा और बाबा के चरणों में बैठकर ठीक होने की प्रार्थना करता रहा। ठीक सात दिन बाद बाबा की कृपा से मैं बिल्कुल ठीक हो गया। मेरी हालत देखकर डॉक्टर भी हैरान हो गये। तब मैंने सोचा कि बाबा से बढ़कर दुनिया में कोई डॉक्टर नहीं है। अब मैं हर रोज़ काम पर जाने से पहले बाबा का आशीर्वाद लेता हूं। बाबा की कृपा से अब मेरी तबीयत बिलकुल ठीक है। मैं बाबा का आभारी रहूंगा। ओम साई राम।

-अविनाश माटा, लुधियाना

मेरी साई अनुभूति

आप सभी को मेरा यानि सुप्रीम ठकराल का प्यार भरा प्रणाम। मेरी साई अनुभूति आप सबके साथ शेयर करना चाहता हूं।

मैं सहारनपुर उत्तर प्रदेश से हूं, साई कृपा से साई भजन गायक भी हूँ। मेरा जन्म निश्चित समय से पूर्व में होने से शरीर में बहुत सी व्याधियां थी और इसी कारणवश मेरे शरीर की सरंचना भी लघु है (लगभग 4.5 फीट। इसी वजह से मैं बहुत ही नकारात्मक महसूस किया करता था और यही सोचता था कि क्या मैं जीवन में कभी कुछ कर पाऊंगा? लेकिन अहोभाग्य! धन्य हैं श्री सच्चिदानंद सदगुरु साईनाथ महाराज जिन्होंने मुझे अपने श्री चरणों की शरण देकर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष अनुभूतियां दीं, जिन्हें मैं बयां करने में असमर्थ हूं।

आज से 27-28 वर्ष पूर्व मैं अपनी माता जी के साथ श्री साई सिद्ध पीठ मंदिर गया जो कि सहारनपुर के ही नाज़िरपुरा बेहट रोड पर स्थित है। उस अंधकारमय काल तक मैं बाबा से अपरिचित था। मेरी माता जी द्वारा मुझे ज़बरदस्ती बाबा साई के मंदिर ले जाने और मंदिर पहुंचकर बाबा जी के श्री चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम करने से ही श्री साई बाबा के वास्तविक स्वरूप का परिचय मिला। इसी के फलस्वरूप गायन करना, जो मेरा बचपन से शौक था, बाबा का आशीष मिलने पर उसमें विशेष निखार आया। संयोगवश मेरा कुछ दोस्तों के साथ रविवार की शाम को बेहट रोड पर स्थित श्री साई सिद्धपीठ मन्दिर में जाना हुआ। मंदिर में पुजारी जी बाबा के समक्ष भजन गा रहे थे। मैं भी भजनों का आनंद ले रहा था। अचानक पुजारी जी की नज़र मुझ पर गई और उन्होंने मुझे भजन गाने के लिए कहा। यह मेरे लिए एक सुखद आश्चर्य से कम ना था क्योंकि वहां उपस्थित पुजारी जी और सभी भक्तजन मुझसे और मेरी भजन गायन कला से अनभिज्ञ थे। पुजारी जी के कहने पर मैंने इसे बाबा की प्रेरणा मानकर एक भजन बाबा के समक्ष उनके श्रीचरणों में अर्पित किया।

भजन गायन के पश्चात पुजारी जी ने मुझे अब हर रविवार को भजन गाने के लिए आग्रह किया। इसी के फलस्वरूप मुझे गुरु पूर्णिमा, श्री साई मंदिर स्थापना दिवस आदि विशेष दिनों में भी भजन करने का आमंत्रण मिला। फिर एक दिन मेरे मित्र ने मुझे कहा कि क्यों न अपने घर में ही बाबा के भजनों का कार्यक्रम किया जाए। मुझे उसका विचार अच्छा लगा और हमने एक गुरुवार को अपने घर पर ही एक छोटी साऊंड वाले और एक ढोलक वाले को बुलाकर भजनों का कार्यक्रम रखा और आस-पास के लोगों को भी आमंत्रित कर लिया। बाबा की कृपा से उस भजन संध्या में इतना रंग बरसा कि लोग झूम उठे। मुझ पर बाबा की ऐसी कृपा हुई कि साई भजन संध्या के मेरे सफर का श्रीगणेश हो गया। उसके बाद मैंने सहारनपुर, देवबंद गाज़ियाबाद और दिल्ली के अतिरिक्त कई शहरों में साई भजन संध्या की।

एक बहुत बड़े हादसे से भी मुझे बाबा ने बचाया। सन् 2011 मेरी शादी हुई, बहुत ही गरीब घर से हमने लड़की ढूंढी, बहुत धूमधाम से शादी हुई। शादी के सारे इंतज़ाम हमने ही किये थे। लड़की की मां पागल थी और उसके पिताजी दुनिया में नहीं थे। तीन-चार महीने में ही उस लड़की ने मुझे बहुत से व्यवहारिक कष्ट दिए। उस लड़की ने मुझ पर जानलेवा हमला करवाने की कोशिश भी की लेकिन बाबा की कृपा से मुझे एक खरोंच तक नहीं आई। कहते हैं- जाको राखे साइयां मार सके ना कोय,
बाल ना बांका कर सके जो जग बैरी होय।
दुर्भाग्यवश मुझे उसे तलाक़ देना पड़ा।

सन् 2017 में बाबा की कृपा से मेरी दोबारा शादी हुई और अब मेरी एक बेटी श्रद्धा और एक बेटा साईमन है दोनों बच्चे बाबा की ही देन हैं इसलिए मैंने इन दोनों का नाम बाबा से ही जोड़ रखा है। इस तरह बाबा ने मुझे एहसास करवाया कि वो हमेशा मेरे साथ थे, हैं और हमेशा रहेंगे ऐसी मेरी उनसे प्रार्थना है।

मैं कभी सोचता था कि क्या मुझे कोई जान भी पाएगा? लेकिन जबसे बाबा के चरणों की शरण में आया हूं तब से मुझे विभिन्न शहरों के साईभक्त निजी रूप से तथा फेसबुक, व्हाट्सएप जैसी सोशल मीडिया नेटवर्क के माध्यम से जानते हैं क्योंकि मैं व्हाट्सएप पर श्री साई सच्चरित्र पारायण ग्रुप चलाता हूं और बाबा के कई ग्रुप्स से भी जुड़ा हुआ हूं। सभी मुझे अपना प्यार दुलार एक भाई, बेटे की तरह ही देते हैं। श्री साई सच्चरित्र का पारायण मैं पिछले कई वर्षों से करता आ रहा हूं और शिरडी से आए हुए बाबा के एक छोटे कैलेंडर से मुझे श्री साई संदेश को विस्तृत रूप में हर साई भक्त तक पहुंचाने की प्रेरणा मिली और आज वह साई संदेश बाबा के हर वहाट्सएप ग्रुप में अलग-अलग साई भक्तों के द्वारा फैल रहा है। ये सब बाबा की ही कृपा है। आप सबसे भी मेरी विनती है कि बाबा पर अपनी आस्था को श्रद्धा और सबूरी के साथ दृढ़ रखें क्योंकि वही सबकी जीवन नैया को पार लगाने में सहायक हैं। बाबा ने हमेशा 'सबका मालिक एक' का संदेश दिया है और उनका प्रेम हर धर्म हर मज़हब के लिए एक समान है। जय साई राम।

-सुप्रीम ठकराल, सहारनपुर

जन्मदिन मुबारक

2 अप्रैल राजन पंडित जी | 6 अप्रैल ऊषा कोहली | 9 अप्रैल सुमन पालीवाल

16 अप्रैल आरती भाटिया | 20 अप्रैल अचिन्त बब्बर | 28 अप्रैल हरीश संतवानी

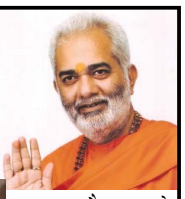

5 अप्रैल को गुरू जी महेन्द्र रमणी जी के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर उन्हें हार्दिक बधाई।

30 अप्रैल को स्वामी बलदेव भारती जी के जन्मदिन के शुभ अवसर पर उन्हें हार्दिक बधाई।

बाबा द्वारकामाई में मेरे पास ही थे

मेरे बाबा बहुत ही प्यारे व निराले हैं। जब वो अपने भक्तों का हाथ पकड़ लेते हैं तो फिर वह बच्चों के प्यार के बंधन में बंध जाते हैं और अपने बच्चों की हमेशा हिफाज़त करते हैं और हर सुख दुख में वह अपने बच्चों के साथ खड़े मिलते हैं।

जब मैं दिसम्बर 2019 में अपने पति के साथ शिरडी गई थी तब का एक अनुभव आप सबको बताना चाहती हूं। मैं शाम की आरती करने द्वारकामाई में गई थी। तब मैंने बाबा से कहा कि बाबा आप मुझे कुछ ऐसा एहसास करवाओ कि आप मेरे साथ ही हो। उसके बाद मैं बाबा के ध्यान में बैठी गई। द्वारकामाई में जब आरती समाप्त हुई तब मैं वहां से उठने लगी, तभी मेरे पास ही पड़ी एक थैली के पैकेट पर मेरी नज़र पड़ी। उसमें बाबा का बूंदी प्रसाद व उदि के पैकेट थे। बाबा ने मुझे एहसास करवा दिया कि वो मेरे साथ ही थे। जो मैंने बाबा से मांगा वो मुझे मिल गया। बाबा का आशीर्वाद पाकर मैं खुश हो गई। मुझे विश्वास है कि आरती के समय बाबा ज़रूर मेरे पास ही थे और मेरे लिए प्रसाद व उदि रखकर चले गये। बाबा यह एहसास करवा कर गये कि बेटी मैं तेरे साथ ही हूं। बाबा से यही प्रार्थना है कि अपनी कृपा सदा बनाए रखें। **-प्रिया,** दिल्ली

खुद पे भरोसा करने का हुनर सीख लो सहारे कितने भी भरोसेमंद हों, एक दिन साथ छोड़ जाते हैं।

Parmhans Enterprises

Disposable & Safety Items

Disposable Bed Sheet, Dispo Panty, Dispo Gown, Letex Gloves, Gillette Razor, Dispo Towell, Dispo Tissue, Dispo Face Mask, Dispo Bra, Dispo Cap, Dispo Shoes Natral Gloves, Dispo Hair Band, Cover Surgi Care Gloves M Fold C Fold, Tissue Box,

Customer Care No.

0870065218 4

E-mail : parmhans.kedar@gmail.com

बधाई हो बधाई

दिनांक 28 अप्रैल को साई द्वारकामाई धाम, ललतोंकलां लुधियाना के प्रधान श्री अविनाश माटा जी व श्रीमती रेखा माटा जी को शादी की सालगिरह के शुभ अवसर पर श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से शुभकामनाऐं एवं हार्दिक बधाई। हम बाबा से दुआ करते हैं कि बाबा का आशीर्वाद आप पर व आपके पूरे परिवार पर सदा बना रहे और आपका पूरा जीवन स्वस्थ, खुशहाल एवं सुखमय हो। **-अंजु टंडन**

बाबा ने सपने में पति के बारे में बताया

मैं साई पूजा लुधियाना में रहती हूं और कई सालों से बाबा की शरण में हूं। मेरी मम्मी की मृत्यु के बाद मेरे पापा और मेरे परिवार वाले मेरे लिए बहुत चिन्तित थे और मेरी शादी करने की सोच रहे थे। मैं शादी नहीं करना चाहती थी। मैं बाबा से कहती थी कि मुझे शादी नहीं करनी। एक दिन मुझे सपने में बाबा ने बताया कि तुम्हारे लिए एक संजीव नाम के लड़के का रिश्ता आएगा तब तुम शादी के लिए हां कर देना। उनका परिवार तुम्हारे परिवार से बहुत अलग होगा। तुम्हें आर्थिक तौर पर भी काफी तंगी आएगी। बाबा ने मुझे मेरी सास की शक्ल भी सपने में ही दिखायी और कहा कि इसी के लड़के से तुम्हारी शादी का योग है, अगर तुम शादी नहीं करोगी तो तुम्हारे पिताजी के स्वास्थ पर असर पड़ सकता है। जब लड़के वाले मुझे देखने आए तो मुझे उनके परिवार में कुछ भी अच्छा नहीं लगा। पर बाबा की बातें याद करके मैंने उन्हें हां कर दी। शादी के बाद जब मेरी विदाई हो रही थी तो थोड़ी दूर जाकर गाड़ी खराब हो गई। सामने से एक गाड़ी आ रही थी जिसमें बाबा की फोटो लगी थी जिसमें बाबा हाथ उठाकर आशीर्वाद दे रहे हैं। तब मेरी मासी सास, जो जानती थी कि मैं साई जी को बहुत मानती हूं। उन्होंने मुझसे कहा कि देखो सामने वाली गाड़ी में बाबा हाथ उठाकर तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं। मैं हमेशा से बाबा को साईमां कहती हूं। मैंने बाबा से कहा था कि मेरी मां तो नहीं हैं पर आप मेरे विवाह में ज़रूर आना, इस तरह बाबा मुझे आशीर्वाद देने आए। जब मैं ससुराल पहुंची तो उसके एक दिन बाद रक्षा बंधन का त्यौहार था। मैं अपने मायके गई थी और जब मैं वापस अपने ससुराल आई तो उसके दो दिन बाद मेरी सास का रूप ही बदल गया। वो मेरे साथ खूब गाली गालौच करने लगी। वो मेरे में गलतियां निकालती रहती थी। मेरे पापा ने मुझे ज़रूरत का सब समान दिया था, उनका कहना था कि पहले एक साल तक तुम ससुराल में निर्वाह करके देखो अगर लोग अच्छे हुए तो हम तुम्हें और भी बहुत कुछ देंगे। मेरे ससुराल में बाबा का कोई स्वरूप नहीं था। मुझे अच्छा नहीं लगता था। तब मुझे बाबा का एक छोटा सा फोटो मिला और मैंने उसे अपने कमरे में टेप से लगा दिया। रात को मेरे पति घर आते तो उन्हें एक बाबा दिखते जो सफेद वस्त्र पहने होते और उनकी सफेद दाढ़ी मूंछे थी। मेरे पति ने पूछा कि तुम कौन से बाबा को मानती हो। तब मैंने उन्हें साई बाबा के बारे में बताया।

शादी के कुछ दिन बाद मेरी सास ने हमें अलग कर दिया। जब मेरी सास ने मुझे अलग किया था तो मेरे पास खाने को कुछ नहीं था। मैंने छोले उबाल कर 5 रूपये का नींबू मंगवा कर, उसमें निचोड़ कर खाया। मेरे पापा गैज़ेटिड ऑफिसर थे और मुझे पता ही नहीं था कि 5 रूपये की भी कोई कीमत होती है। तब मैंने बाबा से कहा कि क्या मैं इतनी बुरी हूं कि आप मुझ पर कृपा नही कर रहे हो। तब बाबा ने एक दिन मुझे स्वप्न में आकर बताया कि ये तेरी परीक्षा की घड़ी है। फिर हम शिरडी गये। हमारे साथ मेरे पापा भी गये। मुझे नहीं मालूम कि मेरे पति ने शिरडी जाने का सारा इन्तज़ाम कैसे किया। हम वहां से डेढ़ फीट का बाबा का स्वरूप लेकर आए। शिरडी में जब हम बाबा के दर्शन करके वापस अपने होटल के कमरे में आए तो मैंने देखा कि मेरे सूटकेस में कृष्ण जी के वस्त्र और प्रसाद था। मुझे ये समझ में नहीं आया कि वो सब मेरे सूटकेस में कहां से आया। जब हम प्रसादालय में गये तो वहां मेरे नाम की एनांउन्समैंट हो रही थी कि आज का प्रसाद साई पूजा लुधियाना की तरफ से है। लेकिन मैंने तो कोई दान की पर्ची नहीं कटवाई थी। मेरे पास इतने पैसे भी नहीं थे किसने मेरे नाम से प्रसाद बंटवाया मुझे नहीं मालूम।

मेरे पति का कैटरिंग का काम था पर उस काम में उनको बहुत नुकसान हुआ और उनको काम बन्द करना पड़ा। मेरे पति 7 हज़ार रूपये की नौकरी कर रहे थे।

मैं जब भी ध्यान में बैठती हूं तो मेरे मन में जो बात होती है तो बाबा उसका जवाब दे देते हैं। मेरे साथ ऐसा कई बार होता है, मुझे अन्दर से आवाज़ आ जाती है।

मेरे पति के चाचा जी से मेरे ससुराल वालों की बातचीत नहीं थी। जब मेरा बेटा पैदा हुआ तो चाचा जी का बेटा हमारे घर आया। मैंने उसे कहा कि वो मेरे पति को कहीं अच्छी जगह नौकरी दिलवा दे। अगले ही दिन उसने मेरे पति को एक अच्छी जगह 25000 रूपये की नौकरी दिलवा दी। वो अक्सर हमारे घर आते रहते थे। एक दिन उन्होंने हमें कहा कि अगर आप 3-4 लाख रूपये का इंतज़ाम कर लो तो हम पावर टूल का काम शुरू कर सकते हैं। मैंने किसी तरह से पैसों का इंतज़ाम किया। हमें जो पहला ऑर्डर मिला वो एक करोड़ रूपये का था जो मुम्बई की एक कम्पनी का था। आज बाबा की कृपा से हमारा बिज़नेस बहुत अच्छा है। सब लोग कहते हैं कि आप पर बाबा की बहुत कृपा है। बाबा की कृपा से आज हमारे घर में किसी चीज़ की कमी नहीं है।

जब हम बाबा की शरण में आ जाते हैं तो बाबा स्वयं हमारे सारे कष्ट दूर कर देते हैं। ओम साई राम। **-साई पूजा,** लुधियाना

-पृष्ठ 1 से आगे

साई हमारे ...

उसकी आँखें भर आईं। वह एकटक बाबा को देखती रही। फिर शौचालय प्रयोग करने के बाद जब वो वापस गाड़ी में आये तो मैंने उन्हें भाव विभोर पाया। उन्होंने खुशी-खुशी सारी बात मुझे बताई। माँ-बेटे की आँखें तब भी नम थी। बाबा ने हमारे प्रयाग-संगम पहुँचने से पहले ही हमको दर्शन के साथ-साथ ये आश्वासन दिया की वो हमारे साथ ही हैं। बल्कि जैसे वो अपने शामा के लिए गया शहर पहले से ही पहुंचे थे, वैसे ही हमारे लिए भी। हम धन्य हो गए और बहुत आभार का अनुभव किया। अपनी मनोस्थिति का हम विवरण ही नहीं कर सकते। मन गद्गद् हो उठा था। बाबा हमारे साथ-साथ चल रहे थे। बाबा हमेशा ही साथ रहते हैं। बाबा कितने दयालु और कृपालु हैं। उनकी लीला अपरम्पार है। जय साई राम। **-डॉ अनिल रावल,** उंझा, गुजरात

श्रद्धा सबूरी

LEKH RAJ & SONS JEWELLERS

For Exclusive
Gold, Diamond, Kundan, Silver Jewellery

Shop No. 3, B-33, Kalkaji New Delhi-19
Phone 26438272

बाबा के चरणों में

सरगम स्टूडियो

Producer of Films, Radio & TV Serials

E-23-B, Lajpat Nagar-2, New Delhi - 110024 Ph. No. 2981-5747

Venus, Zee & World fame

Contact For:

Sai Bhajans

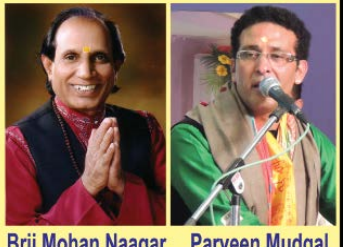

Brij Mohan Naagar Parveen Mudgal

Ph: 9891747701, 9958634815

साई द्वारकामाई धाम ललतों कलां लुधियाना में स्थापना दिवस पर उमड़ा भक्तों का सैलाब

लुधियाना: दिनांक 9 मार्च 2025 को साई द्वारकामाई धाम, पखोवाल रोड, ललतों कलां, लुधियाना में मंदिर का 10वां मूर्ति स्थापना दिवस समारोह बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर विशाल मन्दिर को फूलों एवं रंग-बिरंगी लाइटों से अति सुन्दर सजाया गया और पूरे रास्ते को लाईटों से जगमगाया गया। मंदिर के साथ विशाल पंडाल को भी

अति सुन्दर सजाकर बड़ी स्टेज लगाई गई। सायं 7:30 बजे सर्वप्रथम समिति के सभी सदस्यों ने साई बाबा का पूजन किया। प्रसिद्ध समाज सेवक व विष्णु ग्रुप ऑफ कम्पनीज़ के श्री राज कुमार जैन ने ज्योति प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। तत्पश्चात् बाबा अमरनाथ लंगर कमेटी द्वारा महाआरती की गई। यह अद्भुत नज़ारा देखने योग्य था। आरती के पश्चात् साई भजन संध्या की शुरूआत हुई जिसमें दिल्ली से पधारे सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री पुनीत खुराना जी ने साई भजनों का गुणगान करके समां बांध दिया। देर रात तक भजनों का गुणगान चलता रहा। सभी भक्तों ने उनकी गायिकी का खूब आनन्द लिया और कई भक्तों ने उनके भजनों पर नृत्य भी किया। मुख्यातिथि के रूप में सीनियर डिप्टी मेयर राकेश पराशर, भाजपा नेता राशि अग्रवाल व पार्षद सुमन वर्मा ने वहां आकर साई बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर लक्की ड्रा निकाल कर विजेता भक्तों को इनाम दिये गए जिसमें शिरडी की यात्रा, बाबा का सुन्दर स्वरूप, बाबा की पेंटिंग व अन्य इनाम शामिल हैं। भजनों के दौरान जानेमाने चित्रकार साई रत्न राजेश जी ने बाबा का अति सुन्दर चित्र बनाया जो एक भक्त को पुरस्कार के रूप में दिया गया। इस समारोह में शहर की जानी मानी हस्तियों ने शिरकत की। पंजाब, दिल्ली, गुड़गांव, ज़ीरा जालंधर आदि दूर-दूर के साई भक्तों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। सभी ने विशाल मंदिर में स्थित द्वारकामाई, चावड़ी, गुफा, लंगर हाल की सजावट और साफ सफाई की बहुत सराहना की। भारी भीड़ के बावजूद समस्त व्यवस्था अत्यंत सुचारू रूप से चलती रही, लंगर का पूरा प्रबन्ध बड़े सुचारू रूप से किया गया जिसके लिए सबने मन्दिर कमेटी की भी बहुत प्रशंसा की। अविनाश माटा, दिनेश गोयल वरूण जैन ने आए हुए गणमान्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर और चुनरी औड़ाकर सम्मानित किया। भजन संध्या की समाप्ति पर राजेंद्र गोयल, समीर तांगड़ा, वरूण जैन, विजय जैन ने आए हुए अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का आयोजन श्री शिरडी साई सेवा समिति के प्रधान अविनाश माटा के मार्ग दर्शन में दिनेश गोयल, विरेन्दर शर्मा, वरूण जैन, अनीश ढंड, विजय पुरी, दीपक सिंघल, गिरिश गुप्ता, समीर तागड़ी, राजेन्द्र गोयल, परमजीत कनौजिया, ओमेश बग्गा, एवं मुकेश जैरथ द्वारा बखूबी किया गया। कार्यक्रम में साई सेवक राजीव महाजन, राजू अग्रवाल, हरमीत सिंह, नितिन सूद, सुनील कनौजिया, पिंक कुमार, अनमोल मरिया, जगदीश बजाज एवं अंकुर अरोड़ा, सुखराम का सराहनीय योगदान रहा।

भजन संध्या की समाप्ति पर श्री शिरडी साई सेवा समिति के सभी सदस्यों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए साई बाबा का शुक्राना किया। **-राजेन्द्र गोयल**

साई मंदिर रोहिणी के स्थापना दिवस पर भक्तों को निमंत्रण

दिल्ली: मिनी शिरडी के नाम से प्रसिद्ध शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में दिनांक 12 अप्रैल 2025 को मंदिर का स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर मंदिर की सजावट फूलों एवं लाईटों से की जाएगी। प्रात: 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक मंदिर में जाने माने गायक विजय रहेजा जी द्वारा भजन कीर्तन किया जाएगा। दोपहर की आरती के बाद सभी भक्तों के लिए भंडारे का आयोजन किया जाएगा। तत्पश्चात् हनुमान जन्मोत्सव

के उपलक्ष्य में सांय 4 बजे से 6 बजे तक सुन्दरकांड पाठ का गुणगान आचार्य श्रवण जी महाराज जी द्वारा किया जायेगा। मंदिर की कार्य -कारिणी समिति के प्रधान श्री के. एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता व श्री विमल शर्मा की तरफ से सभी भक्तों से अनुरोध है कि इस कार्यक्रम में सपरिवार शामिल होकर साई बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करें। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर आदर्श नगर में माता की चौकी एवं रामनवमी

दिल्ली: दिनांक 30 मार्च से 6 अप्रैल 2025 तक आदर्श नगर स्थित सुप्रसिद्ध शिरडी साई बाबा मंदिर में नवरात्र एवं रामनवमी का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया। दिनांक 3 अप्रैल को माता की चौकी का आयोजन किया गया। हर वर्ष की तरह पूरे मंदिर को गुब्बारों, फूलों और लाईटों से अति सुन्दर सजाया गया। इस अवसर पर मंदिर में मैय्या के भजनों का गुणगान कमला बहन जी द्वारा किया गया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का आनन्द लिया और मैया का आशीर्वाद प्राप्त किया।

अंत में आरती के बाद सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया।

दिनांक 6 अप्रैल को रामनवमी के पावन अवसर पर मंदिर में साई भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें बूम बूम सेन्डी एवं के.के. अन्जाना जी ने साई भजनों का गुणगान किया। बहुत से भक्तों ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर मैय्या एवं साई बाबा का आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक एवं बाबा के परम भक्त स्वर्गीय श्री बी.पी. मखीजा जी के मार्ग दर्शन में किया गया। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर रघु नगर में साई भजन और माता की चौकी

दिल्ली: दिनांक 22 मार्च 2025 को शिरडी साई बाबा मन्दिर, गली नम्बर 10, रघु नगर में 15वीं विशाल साई भजन संध्या एवं माता की चौकी का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम प्रात: 7 बजे बाबा का मंगलस्नान एवं अभिषेक किया गया। सायं 7 बजे से साई भजन संध्या का

शुभारंभ हुआ जिसमें सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री एस.एन. सेठी एवं मोंटी शाह व उनके साथी कलाकारों ने भजनों का गुणगान किया। उन्होंने अनेक साई भजन एवं माता की भेंटे सुनाकर सबका मन मोह लिया। भक्तों ने उनके भजनों का भरपूर आनंद लिया और कई भक्तों ने उनके भजनों पर नृत्य भी किया। पूरा पंडाल भक्तों से भरा था। आरती के बाद भक्तों ने स्वादिष्ट भण्डारे का आनन्द लिया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक श्री शशि कपूर जी के मार्ग दर्शन में रवि आनन्द, सुरेश जी, धर्मेन्द जी, पुष्कर बतरा, अश्मित, विन्नी, शिवकुमार, रविन्द्र ठाकुर, सुनील राणा, सुभाष जी, मुन्ना, राजकुमार, मनोहर कालरा, अंगद, करण कपूर, अर्जुन, करण मेहरा, सी.ए. दीपांशु एवं राजीव गोयल के सहयोग से अति सुचारू रूप से किया गया।

इस साई मंदिर में श्री शशि कपूर जी एवं उनका परिवार स्वयं बाबा की सेवा करते हैं। यहां चढ़ावा नहीं चढ़ाया जाता। इस मंदिर में आकर मन को बहुत सुकून मिलता है। मंदिर का माहौल अत्यंत भक्तिमय है, भक्तगण यहां बाबा की मौजूदगी महसूस कर सकते हैं। **-कृष्णा पुरी**

भजन सम्राट सक्सैना बंधु द्वारा चंडीगढ़ में साई भजन संध्या

चंडीगढ़: हाल ही में चंडीगढ़ में श्रीमती रेखा एवं उनके परिवार ने उनके बेटे की अच्छी नौकरी मिलने पर बाबा का शुक्रिया अदा करने के लिए विशाल साई भजन संध्या का आयोजन करवाया। इस अवसर पर भजन सम्राट सक्सैना बंधु ने अपने निराले अंदाज़ में

पुराने भजन सुनाए। उनके भजनों को सुनकर सभी भक्त भाव विभोर हो गये और सबकी आंखे नम हो गई। पालकी भजन पर भक्तों ने खूब नृत्य किया। सक्सैना जी ने बताया कि इसी बेटे के जन्म पर भी उन्होंने भजन सुनाकर भक्तों की पुरानी यादों को ताज़ा कर दिया। उन्होंने भक्तों की फरमाईशें पूरी करते हुए अनेक लोकप्रिय भजनों का गुणगान किया था। आरती के बाद सभी भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। **-साई पूजा**

श्री साई कुटुंब परिवार द्वारा शिरडी में भव्य साई भजन संध्या एवं पालकी यात्रा

दिल्ली: दिनांक 18 मार्च 2025 को दिल्ली के श्री साई कुटुंब परिवार द्वारा शिरडी में एक भव्य साई भजन संध्या एवं साई बाबा की भव्य पालकी यात्रा

का भक्तिमय आयोजन किया गया। इस पावन आयोजन का नेतृत्व श्री नवीन जौहरी जी के तत्वाधान में किया गया। शिरडी के समाधि शताब्दी मण्डप पर साई भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें सुप्रसिद्ध भजन गायक आकाश सहारे जी, दिनेश दीवान जी, रविंद्र सक्सेना जी, रोमिल जी और पवन जी ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। दूर दूर से आये साई भक्त इस भजन संध्या में शामिल हुए और उन्होंने भजनों का भरपूर आनंद लिया। मंच संचालन का कार्य संतोष जी एवं अंजु वर्मा जी द्वारा सुंदर ढंग से सम्पन्न किया गया। संस्थान द्वारा सभी कलाकारों को सम्मानित किया गया। इस आयोजन के अंतर्गत बाबा की पालकी यात्रा बड़ी ही धूमधाम से गोविंद धाम से निकाली गई, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से भाग लिया और पूरे श्रद्धा एवं उल्लास के साथ साई नाम का संकीर्तन किया। हम प्रार्थना करते हैं कि साई बाबा अपनी कृपा सभी भक्तों पर इसी प्रकार बनाए रखें और सभी को शांति, समृद्धि एवं भक्ति का आशीर्वाद प्रदान करें। **-आकाश सहारे**

प्रतिदिन शिरडी से साई बाबा के दर्शन, भक्तों के अनुभव,
लाईव प्रोग्राम और बाबा की देश-विदेश की खबरों के लिए
श्री साई सुमिरन टाइम्स की YouTube चैनल को subscribe करें।

वीना मां एवं अशोक गुप्ता जी द्वारा भव्य साई भजन संध्या

दिल्ली: हर साल की तरह इस साल भी दिनांक 8 मार्च 2025 को चिन्मय मिशन, लोधी रोड में श्रद्धेय श्रीमती वीना गुप्ता जी एवं श्री अशोक गुप्ता जी द्वारा भक्तिमय साई भजन संध्या का अति सुन्दर आयोजन किया गया। बाबा का दरबार फूलों से बहुत सुन्दर सजाया गया। साय 5:30 बजे पूजा अर्चना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उसके बाद मुम्बई से आमंत्रित सुप्रसिद्ध भजन सम्राट शैलेन्द्र भारती जी ने अपनी मधुर आवाज़ में साई बाबा के अनेक भजन सुनाकर समां बांध दिया। कई भक्तों ने उनसे अपने मनपसंद भजनों की फरमाईशें भी की जिसे शैलेन्द्र जी ने सहजता से पूरा किया। उनके भजन सुनकर सभी भक्त मंत्रमुग्ध हो गये और उनकी गायकी की सराहना की। पूरा हॉल भक्तों से भरा था। बाबा की परम भक्त श्रीमती वीना गुप्ता जी की झोली में बाबा की उदि प्रकट हुई जिसे देखकर भक्तगण भाव विभोर हो गये। श्रीमती वीना गुप्ता जी की बाबा में बहुत आस्था है और उन पर बाबा की अपार कृपा हर पल बरसती है। शैलेन्द्र जी ने जब पालकी भजन सुनाया तो हॉल में बाबा की पालकी निकाली गई। सबने पालकी पर फूलों की वर्षा की। उसके पश्चात् आरती की गई। तत्पश्चात् सभी भक्तों ने बाबा का अत्यन्त स्वादिष्ट लंगर प्रसाद ग्रहण किया।

श्रीमती वीना गुप्ता जी बाबा की परम भक्त हैं। वह अपने निवास स्थान सिद्धार्थ एक्सटेंशन में हर वीरवार को बाबा की अमृतवाणी का पाठ करती हैं। बहुत से भक्तों ने उनके निवास स्थान पर बाबा की मौजूदगी का एहसास किया है। बाबा की कृपा से वीना मां विदेशों में अमेरिका, कनाडा आदि में अमृतवाणी का पाठ कर चुकी हैं और विदेशों में भी साई भक्ति की ज्योत जलाकर भक्तों को बाबा के करीब ला रही हैं। कोरोना काल के बाद अमृतवाणी का पाठ ऑनलाईन किया जाता है। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर लोधी रोड में रंगपंचमी महोत्सव

दिल्ली: दिनांक 19 मार्च 2025 को दिल्ली के प्रसिद्ध लोधी रोड साई मंदिर में रंगपंचमी महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। दोपहर 3:30 बजे से 5 बजे तक भजनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके पश्चात् 5 बजे धूमधाम से बाबा की भव्य पालकी निकाली गई जिसमें भक्तों की भीड़ उपस्थित रही। सायं 6 बजे बाबा की धूप आरती की गई। आरती के बाद प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर लोकसभा के सदस्य श्री वाकचुरे जी एवं श्रद्धेय चन्द्रभानु सत्पथी गुरूजी ने भी कार्यक्रम में शिरकत की और मंदिर में बाबा के दर्शन किए। इस अवसर पर मंदिर को रंगबिरंगे गुब्बारों और फूलों से सजाया गया। कई भक्तों ने बाबा के साथ रंगपंचमी मनाई। भक्तों ने बड़ी संख्या में इस कार्यक्रम में शामिल होकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का आयोजन श्री आर.के. ऑबरोय के मार्ग दर्शन में साई भक्ता समाज लोधी रोड के सभी सदस्यों एवं भक्तों के सहयोग से किया गया। **-विशाल गुप्ता**

विश्वविख्यात गायक परवीन मलिक एवं शिल्पी मदान द्वारा साई भजनों की अमृतवर्षा

दिल्ली: दिनांक 27 मार्च 2025 को किराड़ी, प्रेम नगर में राजेश बाबू के परिवार द्वारा साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजनों के गुणगान के लिए विश्वविख्यात गायक परवीन मलिक जी एवं शिल्पी मदान जी को आमंत्रित किया गया। परवीन जी और शिल्पी जी ने अपनी मधुर आवाज़ में बाबा के एक से बढ़कर एक भजन भक्तों के समक्ष प्रस्तुत किये जिसका सभी अतिथियों ने खूब आनन्द लिया। बहुत से भक्तों ने अपने मनपसंद भजनों की फरमाईशें भी की जिसे शिल्पी जी ने सहजता से पूरा किया। परवीन मलिक ने भी कई मधुर भजन सुनाए जिसका भक्तों ने आनन्द लिया और उनके भजनों पर नृत्य भी किया। भजनों का सिलसिला देर रात तक चलता रहा। भक्तों की फरमाईश का सिलसिला थम ही नहीं रहा था फिर भी परवीन जी एवं शिल्पी जी ने उन्हें पूरा किया। अंत में राधा कृष्ण और सुदामा, शिव और पार्वती मां की झांकियां भी निकाली गई। जिसका सभी ने आनन्द लिया। इस भजन संध्या में अशोक विहार निवासी नवीन भाटिया जी भी बाबा का आशीर्वाद लेने आए। राजेश जी के परिवार ने परवीन मलिक एवं शिल्पी मदान जी का खूब मान सम्मान किया। अगले वर्ष के लिए भी उन्होंने परवीन मलिक एवं शिल्पी मदान जी को भजनों के लिए आमंत्रित किया। आरती के बाद सभी भक्तों ने भंडारा ग्रहण किया।

सिम्पी मेहता द्वारा साई मंदिर लोधी रोड में भजनों का गुणगान

दिल्ली: दिनांक 27 मार्च 2025 वीरवार को सुप्रसिद्ध गायिका सिम्पी मेहता जी ने लोधी रोड स्थित साई मंदिर में बाबा के समक्ष साई भजनों का गुणगान किया। मंदिर का हाल भक्तों से खचाखच भरा था। मंदिर में उपस्थित सभी भक्तों ने उनके मधुर भजनों का आनन्द लिया और तालियों के साथ भजनों पर उनका साथ दिया। सबने उनकी गायिकी की सराहना की। **-गायत्री**

साई धाम मंदिर महावीर नगर में श्री रामचरितमानस का पाठ

दिल्ली: दिनांक 30 मार्च 2025 को नवरात्रों के शुभ आरंभ पर श्री रामचरितमानस के पाठ का भी शुभारंभ किया गया। मंदिर के भक्तों द्वारा प्रतिदिन पाठ किया गया। मंदिर में नवरात्रों के दौरान भी प्रतिदिन पूजा अर्चना की गई। बहुत से भक्तों का दिनभर आना जाना लगा रहा। श्री रामचरितमानस का पाठ रामनवमी पर दिनांक 6 अप्रैल को सम्पूर्ण हुआ। तत्पश्चात् भजन कीर्तन किया गया।

श्री साई समिति नोयडा द्वारा होली का भव्य आयोजन

नोयडा: दिनांक 14 मार्च 2025 को साई बाबा मंदिर में श्री साई समिति, नोयडा सैक्टर-40 द्वारा होली का पावन पर्व बड़े हर्षोल्लास से बाबा के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर भक्तों ने श्रद्धा भाव से भजनों का गायन भी किया। समारोह में उपस्थित भक्तों ने एक दूसरे को रंग-गुलाल लगाकर प्रेम और सौहार्द का संदेश दिया। समिति के उपाध्यक्ष डॉ. नीरज कुमार शर्मा जी, सदस्य श्री सुनील मान जी, श्री ए.एम त्रिपाठी जी और अन्य सदस्यों एवं भक्तों ने कार्यक्रम में शामिल होकर आयोजन की शोभा बढ़ाई।

भक्तों ने साई बाबा की पूजा-अर्चना कर उनके चरणों में श्रद्धा अर्पित की। सभी भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया। संपूर्ण आयोजन भक्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्रद्धालुओं ने आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति की। **-देवराज गोयल**
महासचिव, श्री साई समिति नोयडा

श्री राम मंदिर हरि नगर में भजन

दिल्ली: हर महीने की भांति इस महिने भी दिनांक 30 मार्च 2025 को श्री राम मंदिर, सी.बी. ब्लॉक हरि नगर में मासिक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। साथ ही नवरात्रों के अवसर पर मैया के भजनों का गुणगान भी किया गया। सांय 6:30 बजे से रात 9:00 बजे तक भजनों का गुणगान किया गया। मंदिर में उपस्थित महिलाओं ने भजनों का गुणगान किया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का बहुत आनंद लिया। आरती के बाद सभी भक्तों को प्रसाद बांटा गया। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती पूनम सचदेवा जी द्वारा भक्तों के सहयोग से किया गया। **-कृष्णा पुरी**

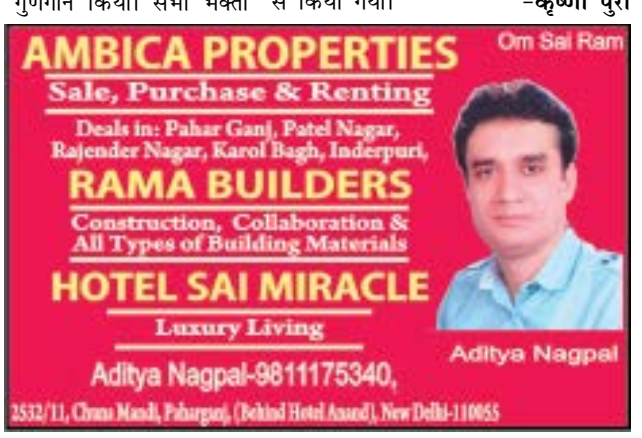

ऋषिकेश साई मंदिर में साई के संग फूलों की होली

ऋषिकेश: दिनांक 14 मार्च 2025 को श्री शिरडी साई धाम, परशुराम चौक, ऋषिकेश में श्री साई बाबा सेवा समिति द्वारा होली के रंग साईनाथ के संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रात: 6 बजे काकड़ आरती की गई। उसके बाद बाबा का सुन्दर श्रृंगार किया गया। तत्पश्चात् मध्यान्ह आरती दोपहर 12 बजे की गई। दोपहर की आरती के बाद सभी भक्तों के लिए भंडारे का आयोजन किया गया। शाम

5:30 बजे से रात 8 बजे तक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन गायक श्री साजन, श्री गोपाल भटनागर व श्री किशन जी ने अपनी मधुर आवाज़ में भजनों का गुणगान किया। सभी भक्तों ने भजनों का आनंद लेने के बाद मंदिर में फूलों से होली खेली और एक दूसरे पर फूल बरसाये। होली मिलन समारोह का मंदिर में आए भक्तों ने खूब आनन्द लिया। इस अवसर पर केबिनट मंत्री श्री प्रेमचंद अग्रवाल, नीलम विजलवान (अध्यक्ष नगर पालिका मुनी की रेति) महंत श्री लोकेश दास, मेयर श्री शंभु पासवान, पार्षद श्रीमति सिमरन कौर, श्रीमति संध्या बिष्ट गोयल, श्री रामकुमार संगर, श्री जयेन्द्र रमोला, श्री ललित मोहन मिश्रा, डॉक्टर नीरजा गोयल व श्री राजेन्द्र गुप्ता ने भी कार्यक्रम में शिरकत की। सभी भक्तों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई और सभी भक्तों ने प्रसाद भी ग्रहण किया।

कार्यक्रम का आयोजन श्री अशोक थापा जी के मार्ग दर्शन में समिति के सदस्यों द्वारा किया गया। समिति के सभी सदस्य वेद प्रकाश धींगरा, ओम प्रकाश मुलतानी, संजय कपूर, सुरेन्द्र आहूजा, दिनेश शर्मा, संजय चौहान, कनिष्का, अनीता थापा, रीता कपूर, ज्योति मुल्तानी, कमल किशोर, पंडित वेद कोठारी, प्रमोद थापा व सीमा थापा ने इस होली मिलन को सफल एवं मनोरंजक बनाने के में सहयोग दिया। शेज आरती के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। **-अंजली थापा**

श्री साई सुमिरन टाइम्स की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
Ph: 9818023070

Sai Dham
SAI DHAM AROGYAM
(In ever lasting memory of Aditya Dicky Singh)
A unit of Shirdi Sai Baba Temple Society
Sai Dham Marg, Sector 86, Faridabad 121007

- यहाँ हृदय रोगियों के ईलाज के लिए EECP की मशीन लगाई गई है जिसके द्वारा बिना ऑपरेशन के हृदय रोगों का ईलाज किया जाता है। इसमें 1 घण्टा प्रतिदिन 30 दिन तक ईलाज किया जाता है और इसका प्रतिदिन का शुल्क मात्र 500 रूपये है।
- हृदय रोग विशेषज्ञ की ओपीडी और दवाई निःशुल्क है।

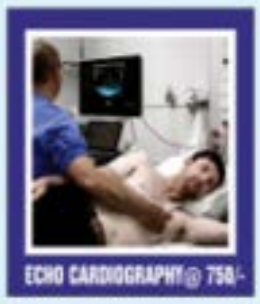
ECHO CARDIOGRAPHY@ 750/-

TMT TEST@750/-

Color Doppler @750/-

HOLTER TEST

EECP@ 500/-

ECG @ 20/-

Blood Test@ 50% Discount

DSE Test @1950/-

OPD FREE WITH MEDICINES

Dr. Pankaj Mohan Sharma
MBBS, MD (Medicine) DNB Cardiology
Mon. to Fri. - 6 pm to 8 pm

Dr. Nupur Saxena
MDS
Mon. to Sat. - 10 am to 1 pm
5 pm to 8 pm

EECP की एक मशीन से केवल 11 मरीजों का ईलाज एक महीने में संभव है। ज्यादा मरीजों के आने की वजह से दूसरी मशीन का आर्डर दिया है जिसकी कीमत 11,79,360 रूपये है। आप से अनुरोध है कि इस सेवा से लाभ उठायें और यथा संभव आर्थिक योगदान करें।

BHIM UPI

For Enquiry/Appointment: 7011116969

नीलू जग्गी के निवास स्थान पर शैलेन्द्र भारती द्वारा साई गुणगान

दिल्ली: बाबा की परम भक्त श्रीमती नीलू जग्गी जी ने दिनांक 9 मार्च 2025 को अपने निवास स्थान, साऊथ एक्सटेंशन में प्रात: 11 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक साई भजनों के कार्यक्रम का आयोजन किया। नीलू जी ने बाबा का बहुत ही सुन्दर दरबार फूलों से सजाया। इस अवसर पर मुम्बई से आमंत्रित सुप्रसिद्ध गायक शैलेन्द्र भारती जी ने अपनी मधुर आवाज़ में साई भजनों का गुणगान किया। शैलेन्द्र जी ने एक के बाद एक मनभावन भजन सुनाकर सबको साई भक्ति में सराबोर कर दिया। वहां आए भक्तों ने साईमय माहौल में उनके भजनों का भरपूर आनन्द लिया। भजनों के बाद बाबा की आरती की गई। आरती के बाद सभी ने अत्यन्त स्वादिष्ट भोजन प्रसाद ग्रहण किया

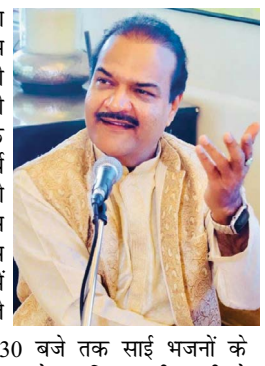

और नीलू जी ने सभी को प्रसाद बांटा।

लगभग 15-16 साल पहले बाबा ने नीलू जी के स्वप्न में आकर उन्हें ऑस्ट्रेलिया के Melbourne शहर में साई मंदिर बनवाने की प्रेरणा दी। उसके बाद नीलू जी ने Melbourne में बाबा के विशाल मंदिर की स्थापना करवाई। हालांकि इस कार्य में उन्हें बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और बाबा की कृपा से 16 अप्रैल 2006 को मंदिर की स्थापना की गई जो अत्यन्त सराहनीय है। नीलू जी का मानना है कि ये सब बाबा की कृपा से ही संभव हो पाया।

जन्मदिन पर सक्सैना बंधु द्वारा भजन

दिल्ली: दिनांक 18 मार्च 2025 को श्री करमचन्द जी ने अपने 85वें जन्मदिवस के शुभावसर पर बाबा का आशीर्वाद पाने के लिए अपने निवास स्थान हरि नगर में साई भजनों का गुणगान करवाया। इस अवसर पर उन्होंने भजनों के गुणगान के लिए भजन सम्राट

सक्सैना बंधु जी को आमंत्रित किया। पूजा अर्चना के बाद भजनों का शुभारंभ अमित सक्सैना जी ने गणेश वंदना से किया उन्होंने कई भजन सुनाकर सभी का मन मोह लिया। कई भक्तों ने भजनों पर नृत्य भी किया। श्रद्धेय सुरेन्द्र सक्सेना जी ने भी कई लोकप्रिय भजन सुनाए। भजनों के अंत में पालकी निकाली गई। जन्मदिन के अवसर पर करमचन्द जी को उनकी पत्नी एवं उनकी बेटियों और उनके परिवार वालों ने खूब शुभकामनाएं दी और बाबा से उनकी लम्बी उम्र और स्वस्थ जीवन की कामना की। आरती के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। उसके पश्चात् सभी के लिए स्वादिष्ट भोजन प्रसाद की व्यवस्था भी की गई थी। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से उन्हें जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर बक्सर में रंगपंचमी हर्षोल्लास से सम्पन्न

बक्सर: दिनांक 19 मार्च 2025 को हर साल की तरह बक्सर के साई मंदिर सती घाट एवं लाल गंज में रंगपंचमी का त्यौहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सांयकाल में आरती के पश्चात् बाबा के चरणों में अबीर-गुलाल अर्पित किया गया। उसके पश्चात् सभी साई भक्तों ने एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाया।

श्री साई श्रद्धा संस्थान के सदस्यों में श्री परशुराम चौधरी, श्री चन्दन गुप्ता, श्री सुदर्शन कुमार, श्री नागेन्द्र प्रसाद, श्री राजमनी प्रसाद, श्री संजय यादव एवं अन्य भक्तों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

साई धाम मंदिर लाल गंज में साई परिवार के सदस्यगण श्री कृष्णा कौशल, श्री प्रेमचंद, श्री राजेश लाल, श्री संजय साईनाथ, श्री संजय केसरी, श्री चन्दन साई एवं अन्य सदस्यगणों ने भी रंग पंचमी के अवसर पर एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर भाईचारे एवं भक्ति का संदेश दिया।

-बलराम गुप्ता, बक्सर

हर्ष साई द्वारा मंगोल पुरी में विशाल साई भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 8 मार्च 2025 को श्री मोहन लाल जी सारवान और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती आशा जी ने अपने निवास स्थान पी ब्लॉक, गली नंबर 7, मंगोलपुरी, दिल्ली में अपने पुत्र प्रमोद और पुत्रवधु ज्योति की 25वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर विशाल साई भजन संध्या का आयोजन किया। साई भजनों की अमृत वर्षा करने हेतु दिल्ली के सुप्रसिद्ध साई भजन गायक हर्ष साई जी को बुलाया गया। उन्होंने अपने निराले अंदाज़ में भजन सुनाकर सभी भक्तों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभी भक्तों ने खूब

कर दिया। भजनों के दौरान राधा कृष्ण जी की झांकी और साई बाबा की झांकी का प्रदर्शन किया गया जिसका वहां मौजूद भक्तों ने खूब आनंद लिया। उसके बाद भक्तों ने पंडाल में नाच गाकर नाचकर व बाबा के भजनों पर तालियां बजा कर आनंद लिया। मंच संचालन श्री परवीन लूथरा जी ने किया। श्री दिनेश दीवान जी ने भी साई के भजन सुनाकर सबको आनंदित बाबा की पालकी निकाली। अंत में आरती की गई और सबको प्रसाद वितरण किया गया। सभी भक्तों ने भंडारा ग्रहण कर प्रस्थान किया। **-जी.आर. नंदा**

शिरडी धाम विकासपुरी में भजन

दिल्ली: शिरडी धाम, के.जी.-1, डिस्पैंसरी रोड, विकासपुरी में वीरवार दिनांक 6 मार्च 2025 को साई भजनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सुप्रसिद्ध गायक सन्नी शिवराज एवं संदीप कालरा

द्वारा शाम 6:30 बजे से भजनों का गुणगान किया गया। भक्तिमय माहौल में सभी भक्तों ने भजनों का आनंद लिया। भजनों से पूर्व मंदिर में बाबा की पालकी निकाली गई और भजनों के बाद सभी को प्रसाद एवं भंडारा वितरित किया गया। सभी भक्तों ने स्व. श्री विक्रम महाजन को याद करते हुए सभी ने उनकी कमी महसूस की और

उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस कार्यक्रम का आयोजन शिरडी धाम

के संस्थापक स्व. श्री विक्रम महाजन की धर्मपत्नी श्रीमती मीनू महाजन और श्री विशाल सेठ द्वारा किया गया। **-पूनम धवन**

सिम्पी मेहता द्वारा पीतमपुरा में माता की चौकी

दिल्ली: दिनांक 16 मार्च 2025 को गोयल परिवार द्वारा गोल्डन एप्पल मैंशन पीतमपुरा में माता की चौकी का आयोजन किया गया। विशाल पंडाल में माता का दरबार बहुत ही सुन्दर सजाया गया। माता के भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध भजन गायिका सिम्पी मेहता जी को आमंत्रित किया गया। सिम्पी मेहता जी ने अपनी मीठी आवाज़ में कई मधुर माता की भेंटों का गुणगान किया। उनके गाये भजनों पर भक्तों ने नृत्य भी किया। उनके भजनों से सारा माहौल भक्तिमय हो गया। गोयल परिवार ने सभी के लिए स्वादिष्ट भोजन प्रसाद का भी प्रबन्ध किया। सभी ने गोयल परिवार को माता की चौकी करवाने पर बधाई दी। **-गायत्री सिंह**

कंचन मेहरा के निवास स्थान पर साई अमृतवाणी पाठ एवं भजन

नोयडा: दिनांक 27 मार्च 2025 को बाबा की परम भक्त कंचन मेहरा जी के निवास स्थान महावीर अपार्टमेंट, सैक्टर-39, नोयडा में साई अमृतवाणी का पाठ करवाया। अमृतवाणी एवं भजनों के गुणगान के लिए नोयडा की सुप्रसिद्ध भजन गायिका शालिनी

गुप्ता जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने साई अमृतवाणी का पाठ किया उसके बाद बाबा के बहुत से कर्णप्रिय भजन सुनाए। उनके भजनों पर भक्तों ने नृत्य भी किया। उनके भजनों से घर का पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। शालू गुप्ता की गायकी की सभी ने सराहना की। आरती के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। कंचन जी ने आए हुए सभी अतिथियों को लड्डू और फल का प्रसाद दिया। **-रश्मी कालरा**

पिछले अंक से आगे...

साई के चरण कमलों में

डा. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी -1986 अलौकिक ज्योति का वर्ष

साई धाम का प्रथम भजन एवं भंडारा 1987 में दशहरा के पावन अवसर पर आयोजित किया गया। यह भी श्री जगदीश प्रसाद द्वारा ही प्रायोजित था। हमें यह ज्ञात नही था कि दशहरा साई बाबा का महासमाधि दिवस है तथा साई-भक्तों के लिये विशेष तौर पर महत्त्वपूर्ण है। पूरी-सब्जी का प्रसाद लोगों में बाँटा गया। डॉ. गुप्ता को याद है कि आरती के पश्चात गरीब बच्चे बार-बार प्रसाद लेने चले आते थे। कभी-कभी वे आपस में वस्त्र बदलकर आते थे ताकि प्रसाद पुन:पुन: लेने पर वे पहचाने न जाएँ। यह डॉ. गुप्ता के लिये बड़ा सबक था। उन्होंने इस बात को समझा कि जो गरीब वंचित बच्चे थे, वे भूख से अभिभूत होकर बार-बार भोजन लेने आते और कुछ अपने परिवार वालों के लिये भी ले जाते। इसी घटना ने शिरडी साई बाबा स्कूल को स्थापित करने के लिए उनके मन में बीजारोपण कर दिया।

अगले महीने, नवम्बर में, डॉ. गुप्ता के चचेरे भाई ने भजन एवं भंडारा अपने जन्मदिन के अवसर पर आयोजित किया। दिसम्बर के महीने में यह भजन-भंडारा गुरूजी के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित किया गया। एक मशहूर गायक तथा साई-भक्त भजन में भाग नहीं ले सके क्योंकि उन तक इस आयोजन की जानकारी नहीं पहुँच सकी। इस घटना के बाद गुरू जी ने यह तय किया कि भजन और भंडारे का आयोजन प्रत्येक महीने के दूसरे रविवार को किया जाए ताकि सभी को इस बात की जानकारी रहे। इस तरह दिन निर्धारित कर देने से भक्त, मित्रगण, रिश्तेदार तथा वहाँ रहने वाले लोगों को पहले से ही कार्यक्रम की जानकारी रहती थी तथा वे तय समय पर उपस्थित होकर उत्सव-आयोजन में भाग लेते थे। उन दिनों टेलिफोन की सुविधा बहुत प्रचलित नहीं थी इसलिये लोगों को सूचित करना कठिन था। दिल्ली से फरीदाबाद जाते समय अगर हमें किसी गाड़ी पर बाबा का फोटो लगा हुआ मिलता तो हम उनका पीछा करते तथा किसी ट्रेफिक लाईट पर रुकने पर हम उन्हें साई धाम के बारे में बताते तथा भजन-भंडारे में आने का आमंत्रण देते, गुरू जी बड़े उत्साहपूर्वक हमें यह बताते हैं।

चाहे कुछ भी हो जाए, डॉ. मोतीलाल गुप्ता तथा श्रीमती कान्ता गुप्ता दिल्ली से फरीदाबाद प्रत्येक महीने के दूसरे रविवार को प्रात: ही भजन-भंडारे के आयोजन के लिये प्रस्थान कर देते थे। उस दिन तम्बू लगाया जाता था, हलवाई बुलाये जाते थे, राशन की खरीदारी तथा अन्य कई तरह की व्यवस्था की जाती थी। हमने सूचना पट पर तीर के निशान बना कर महत्त्वपूर्ण जगहों पर लगा दिये ताकि लोगों को साई धाम तक पहुँचने का दिशा-निर्देश मिल जाए, उन दिनों 'गूगल मैप' तो था नहीं, गुरूजी मुस्कुराते हुए हमें बताते हैं। एक सज्जन पुरूष को जब हमारे सूचना-पट के बारे में ज्ञात हुआ तो उन्होंने उसकी रंगाई का खर्च उठाने की पेशकश की। परन्तु कुछ समय बाद नगर निगम ने अधिकांश सूचना-पट्ट हटवा दिए।

ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग अब साई धाम से जुड़ने लगे। भजन का आयोजन अब लोगों के घरों में भी होने लगा। उन दिनों उत्तर भारत में इस महान संत साई बाबा और उनके प्रवचनों और चमत्कारी आशीषों को जानने वाले कम लोग थे। गुरू जी साई का उपदेश चहुँ-ओर फैलाना चाहते थे। भजनों के माध्यम से भक्तगण आनंदित होकर बाबा के उपदेशों का गुणगान करते थे। कई भक्त इन भजन गायकों को अपने घर पर आमंत्रित करना चाहते थे ताकि उनका घर भी इन भजनों के साथ खुशी से झूम उठे। इससे उत्तम ईश्वर की क्या साधना हो

सकती है? इन भजनों में भक्त भक्ति से ओत-प्रोत हो जाते थे और उन्हें परमानन्द तथा पूर्ण शांति की प्राप्ति होती थी।

गुरू जी की बड़ी भाभी, श्रीमती शारदा अग्रवाल बाबा की अनन्य भक्त थीं जिन्होंने कई मधुर भजनों की रचना की तथा अपने स्वरों से सजाया और जिनका ढोलकी की ताल पर साथ दिया एक अन्य साई-भक्त, श्रीमती शीला भाटिया ने। श्रीमती भाटिया साई धाम की सक्रिय सदस्या थीं। वे साई-भक्तों के घरों में भजनों के आयोजन का कार्यभार संभालती थीं। इस तरह साई के उपदेशों का प्रचार किया जाता था एवं साथ ही साथ साई धाम के उद्देश्य से भी अवगत कराया जाता था। डॉ. गुप्ता की यह भजन मंडली काफी लोकप्रिय हो गयी और ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग इससे जुड़ गये। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के स्वर्ण पदक धारक तथा एक सफल व्यवसायी ने सांसारिक सम्मान त्याग कर घर-घर भजन गाकर साई बाबा का संदेश जन-जन में फैलाने का शुभ कार्य किया।

कुछ लोगों ने आपत्ति जताई कि अनपढ़ गाँव वाले, जो साई बाबा को जानते भी नहीं थे, उन्हें भजन और भंडारे में क्यों सम्मिलित किया जाता है। उन लोगों ने शंका जताई कि गाँव के ये लोग रात में लूटपाट मचाते हैं और साई धाम को नुकसान पहुँचाते हैं। उन लोगों को गुरू जी ने समझाया कि बाबा के उपदेश को फैलाने के लिये किसी तरह का भेदभाव नहीं करना चाहिये। साई बाबा के प्रवचनों एवं उपदेशों से किसी को भी वंचित नहीं किया जा सकता। गरीब, अमीर, विद्वान, अनपढ़, विभिन्न धर्मों के लोग, सभी को बाबा के उपदेशों को सुनने का सम्पूर्ण अधिकार है। बाबा की दया दृष्टि तथा उनके उपदेश सभी के लिये समतुल्य हैं जैसे की सूर्य की किरणें बिना किसी भेद-भाव के सारी दिशाओं का अंधकार मिटाती हैं।

1988 में डॉ. गुप्ता ने सूचना एवं प्रसारण मंत्री से निवेदन किया कि मशहूर अभिनेता मनोज कुमार द्वारा निर्मित फिल्म 'शिरडी के साई बाबा' का दूरदर्शन पर रविवार के दिन प्रसारण किया जाए। यह फिल्म बाबा की जीवनी, श्री साई सच्चरित्र पर आधारित है। इस प्रकार हम साई सच्चरित्र तथा उसके उपदेशों को जन-मानस तक पहुँचा सके, गुरू जी ने हमें समझाया। संस्थान के दैनिक खर्च के लिये डॉ. गुप्ता की संचित आय का उपयोग किया जाता। कुछ भक्तों ने दान देना प्रारंभ किया तथा उन लोगों ने अपने परिवार वालों तथा मित्रों से भी सहयोग करने का निवेदन किया। 10 रूपये की रसीद भक्तों को उनके दान के एवज मे दी जाने लगी।

प्रथम 10 वर्ष साई धाम के लिये संघर्ष के वर्ष थे। शुरू के दिनों में यहाँ यातायात के लिये सिर्फ एक टूटा-फूटा मार्ग था। उन दिनों ओटो रिक्शा भी दो मील जाने के बाद ही मिल पाता था। वहाँ के स्थानीय लोगों की यह जिज्ञासा थी कि साई बाबा कौन हैं? यातायात के साधन नहीं होने के कारण आगतुंकों को भजन में सम्मिलित होने के लिये प्रोत्साहित करना आसान नहीं था। डॉ. मोतीलाल गुप्ता तथा श्रीमती कान्ता गुप्ता अपने संकल्प पर दृढ़ थे और साई धाम के संकल्पों को विस्तार देने के लिये निरन्तर प्रयासरत रहते थे। उन्होंने ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को साई धाम से जोड़ने का हर-संभव प्रयास किया क्योंकि कोई भी संस्थान लोगों के जुड़ाव से ही परिभाषित होती है। पर्चे बाँटे जाते थे तथा महत्त्वपूर्ण स्थानों के सूचना-पट पर चिपकाये जाते थे। गुप्ता दंपति की ही तरह उन भक्तों को भी श्रेय जाता है जो अपनी निरंतर भक्ति और साई धाम के प्रति लगाव के साथ अन्य लोगों को भी जुड़ने के लिये प्रोत्साहित करते थे।

समय के साथ डॉ. मोतीलाल गुप्ता द्वारा आरंभ किया गया कारवाँ बढ़ता ही गया। अधिक से अधिक जनता भजन कार्यक्रमों से जुड़ती चली गई और वर्तमान का मंदिर परिसर बड़े पैमाने के कार्यक्रम के लिये छोटा पड़ने लगा एवं एक बड़े मंदिर परिसर की आवश्यकता महसूस होने लगी। नये मंदिर बनाने के लिये धनराशि कहाँ से जुटाई जाए, यह एक बड़ा सवाल था। जो भी धनराशि इकटठा होती, वह तो साई धाम मन्दिर के कार्य-कलापों के लिये ही कम पड़ती थी और दान द्वारा पैसा जमा करने में अधिक समय लग जाता परन्तु भाग्य में कुछ और ही लिखा था। -क्रमश:

हिंदी अनुवाद: **डा. नीरजा प्रसाद**

आभार: साई के चरण कमलों में

साई मंदिर ज़ीरा में स्थापना दिवस

ज़ीरा: दिनांक 27 मार्च 2025 को साई मंदिर, ज़ीरा में साई मंदिर का स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। साई धाम मंदिर में प्रात: बाबा को दूध, दही, शहद से स्नान करवाया गया और बाबा को सुंदर चोला पहनाया गया। फिर बाबा को लड्डूओं का भोग लगाया गया। शाम को शरण दीदी जी के द्वारा कीर्तन किया गया। साई महिला परिवार के सदस्यों ने अनेक भजन गाकर साई बाबा जी का गुणगान किया और सारी संगत ने नाच गाकर उनका साथ दिया। आरती के बाद लंगर लगाया गया। जिसका सभी भक्तों ने आनन्द लिया। फिर शिरडी जाने के लिए भक्तों का जत्था भी वहीं से

रवाना हुआ। सभी भक्तों ने शरणजीत दीदी के भजनों का खूब आनन्द लिया। **-रेनू**

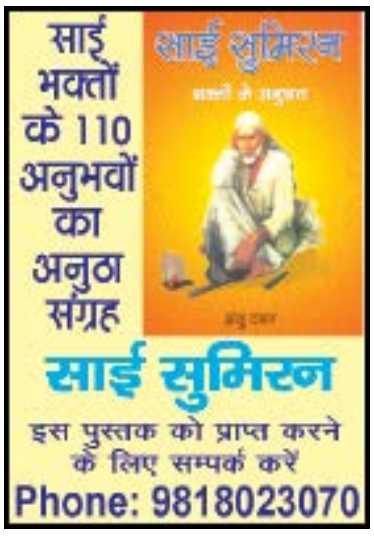

बहल परिवार द्वारा साई भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 9 मार्च 2025 को बाबा की परम भक्त श्रीमती योगेश बहल जी ने अपने निवास स्थान संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश में साई भजन संध्या का आयोजन किया। सांय 5 बजे पूजा अर्चना के

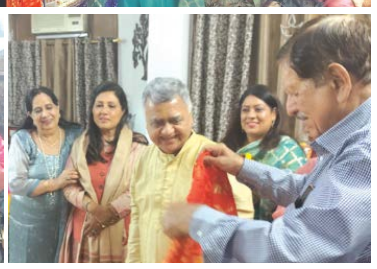

बाद साई भजन संध्या का शुभारंभ हुआ। भजन गायक श्री सुमित साई ने अपनी मधुर आवाज़ में एक के बाद एक मनभावन भजन सुनाकर पूरे माहौल को साईमय बना दिया। उनके भजनों पर भावविभोर होकर कई भक्तों ने बाबा की मस्ती में नृत्य भी किया। श्री साई महिला संगठन की सभी सदस्य एवं अनेक भक्त इस भजन संध्या में शामिल हुए। भजनों का आनन्द लेने के बाद सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भोजन प्रसाद का भी आनन्द लिया। आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम के आयोजन में श्री यशपाल बहल, क्षितिज बहल, नेहा बहल, साईशा बहल, राहुल बंसल, शीना बंसल, आद्या बंसल का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का आयोजन बखूबी किया गया।

-कृष्णा पुरी

श्री साई समिति नोएडा द्वारा शिक्षा भवन का निर्माण

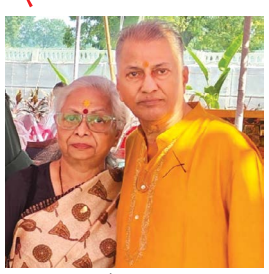

श्री साई समिति, नोएडा सैक्टर 40 द्वारा नोयडा में शिक्षा भवन (स्कूल) का निर्माण किया जा रहा है। जहां पर बच्चे 12वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। श्री साई समिति द्वारा पहले भी एक स्कूल चलाया जा रहा है जिसमें 10वीं तक के बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा दी जाती है। बहुत से ज़रूरतमंद बच्चे इस सुविधा का लाभ ले रहे हैं। इस नये स्कूल के बन जाने से बच्चों का काफी लाभ होगा। इस स्कूल में शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को कई तरह के कोर्स करवाये जाऐंगे ताकि वो भविष्य में आत्म निर्भर बन सके। मंदिर के पूर्व प्रधान एवं Sai Packaging Co. के MD श्री विजय आर. राघवन जी ने 14,60,000/- की CSR फंडिंग से शिक्षा भवन के निर्माण हेतु अपना सहयोग प्रदान किया है। उनका मानना है कि उनके इस सहयोग से और भी बहुत से भक्त प्रेरित होकर इस पुण्य कार्य मे योगदान करेंगे। उनका यह उदार योगदान नि:संदेह ज़रूरतमंदों के लिए आशा की किरण बनेगा। श्री साई समिति परिवार के सदस्यों ने हृदय से उनका आभार व्यक्त किया और बाबा से उनके लिए प्रार्थना की कि बाबा उन्हें अपार खुशियाँ एवं सफलता प्रदान करें। श्री साई समिति परिवार मानव सेवा के कार्य में संलग्न है। **-जी.आर. नंदा**

साई मंदिर अहमदाबाद में शिवरात्रि

अहमदाबाद: भगवान श्री शंकर जी और सदगुरु श्री साईबाबा की असीम कृपा और आशीर्वाद से दिनांक 26 फरवरी 2025 बुधवार को श्री साई बाबा मंदिर, सरदारनगर, अहमदाबाद में 35वां वार्षिक महाशिवरात्रि महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। मंदिर की स्थापना 31

दिसम्बर सन् 1992 में हुई और मंदिर की स्थापना से पहले 2 वर्ष यानी सन् 1990 और 1991 में मंदिर के प्लॉट पर कुछ स्थानीय रहवासियों द्वारा महाशिवरात्रि महोत्सव मनाया गया जिसकी सेवाओं के फल स्वरूप सदगुरु श्री साईबाबा जी का मंदिर बना और 31 दिसम्बर सन् 1992 में सदगुरु श्री साईबाबा की प्राण प्रतिष्ठा हुई। अब मंदिर की स्थापना के 32 वर्ष पूरे हुए हैं और महाशिवरात्रि महोत्सव के 34 वर्ष पूरे हुए हैं और हर वर्ष शुक्रगुज़ारी के रूप में वार्षिक महाशिवरात्रि महोत्सव मनाया जाता है। इस दिन वर्ष में एक बार महाशिवरात्रि के उपलक्ष में एक विशेष प्रेरणादायक झांकी के दर्शन का आयोजन किया जाता है, जो इस वर्ष मां गंगा के अवतरण की झांकी के दर्शन सुबह 5 बजे से रात 10 बजे तक रखे गये। श्री संगतानी जी ने मां गंगा के पृथ्वी पर अवतरण की महिमा बताते हुए बताया कि भगीरथ राजा ने युगों पहले अपने स्वर्गवासी पूर्वजों को मोक्ष दिलाने के लिए गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए ईश्वर की कठिन तपस्या की। अगर गंगा सीधी धरती पर आती तो उसके वेग से तेज़ धारा धरती पर आते ही पाताल में चली जाती, इसलिए भगीरथ जी ने भगवान शंकर जी को अपनी भक्ति से प्रसन्न किया और शिवजी ने गंगा को अपनी जटाओं में समा लिया और शिवजी ने एक जटा खोली और गंगा धरती पर आई। भगीरथ जी के सभी पूर्वजों को मोक्ष मिला और गंगा मैया इस प्रकार मोक्ष दायनी बनी।

मंदिर में सुबह 5 बजे से रात 9:30 बजे तक श्री साई सच्चरित्र का अखंड पारायण किया गया। सुबह 5 बजे सद्गुरु श्री साईबाबा जी और भगवान श्री शंकर जी का विशेष महाभिषेक किया गया। सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक मंदिर में आने वाले दर्शनार्थियों को बाबा की विशेष खिचड़ी प्रसाद का वितरण किया गया। सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक नारायण सेवा भंडारा प्रसाद का वितरण किया गया। रात 9:30 बजे मंदिर की नियमित आरती के साथ श्री साई सच्चरित्र अखंड पारायण की आरती करके पूर्णाहुति की गई। शाम 7 बजे से रात 10 बजे तक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें मंदिर की साई भक्त भजन मंडली द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। सुबह 5 बजे से रात 10 बजे तक लगभग 5000 श्रद्धालु भक्तों ने महाशिवरात्रि महोत्सव पर दर्शन एवं सेवाओं का लाभ लिया।

संगीता ग्रोवर सम्मानित

अन्तर्राष्ट्रीय सांझा संकलनों में रचनात्मक सहभागिता हेतु संगीता ग्रोवर को श्रेष्ठ काव्यरत्न सम्मान से सम्मानित किया गया।

संगीता ग्रोवर जी से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा जब गायन, लेखन का सफर शुरू किया था तब ये सोचा नहीं था क्या होगा, बस साई जी को हाथ पकड़ा दिया था कि अब आप जानों, सपने देख रही हूं मैं, आगे आपकी इच्छा। बाबा ने हाथ पकड़ लिया और चलाते जा रहे हैं। भावुक होकर उन्होंने कहा, जब आपको पता होता है कोई साथ नहीं, तब डर लगता है, उस पल बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा, आज साई कृपा से सब साथ हैं और सहयोग भी करते हैं। शुकराना मेरे साई जी का। मेहनत मैं कर रही हूं पर करवाते मेरे साई हैं, सिर्फ साई।

-संगीता ग्रोवर, कवियत्री, लेखिका, गायिका

ऊं साई द्वारकामाई बिहिया भोजपुर में रंग पंचमी

भोजपुर: दिनांक 19 मार्च से 21 मार्च 2025 तक ओम साई द्वारकामाई सेवा संस्थान बिहिया, भोजपुर में रंगपंचमी का

त्यौहार धूमधाम से मनाया गया। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में बाबा का भंडारा, पूजा अर्चना एवं आरती और साई जागरण का आयोजन किया गया। प्रतिदिन बाबा की पालकी शोभायात्रा निकाली गई। प्रात: दोपहर और शाम की आरती में भारी संख्या में भक्तगण शामिल हुए। तीनों दिन मंदिर में भक्तों का मेला लगा रहा और हर कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ। मंदिर के संचालक एवं संस्थापक श्री गणेश प्रसाद के मार्ग दर्शन में बिहिया वासियों के सहयोग से रंग पंचमी का महापर्व धूमधाम से सम्पन्न हुआ। बहुत से भक्तों ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर रंगपंचमी का आनन्द लिया। सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। श्री गणेश प्रसाद की पुत्री सुश्री नेहा साई भजनों का गुणगान करती हैं।

ओम साई द्वारकामाई सेवा संस्थान बिहिया का उद्देश्य जीव सेवा, परोपकार एवं असहायों की मदद करना है।

-बलराम गुप्ता, बक्सर

हमारी जो भी इच्छा हो वहीं करें, कहीं भी रहें लेकिन हमको अवश्य ही यह याद रखना चाहिए कि बाबा जी के उदर में समस्त प्राणी अर्थात जड़ चेतन समाए हुए हैं। बाबा जी ही समस्त प्राणियों के भगवान हैं एवं सद्गुरू श्री साईनाथ के नियंत्रण/संचालन में ही समस्त ब्रह्माण्ड है। बाबा की भक्ति करने वालों को कभी कोई भी हानि नहीं पहुंचा सकता किन्तु बाबा के ध्यान की उपेक्षा करने वाला इस संसार रूपी माया में फंस कर अनेकों समस्याओं में अपने को उलझा हुआ ही पाता है। दुख के अंधेरे में उजाला साई नाम का।

-सक्सैना बंधु की कलम से

गुरु कृपा से बरसों पुराने रोग से मुक्ति मिली

मेरा नाम राजरानी है और मैं मुरादनगर की रहने वाली हूँ। मेरे पति MTNL में नौकरी करते हैं। गीता कॉलोनी दिल्ली में उसी इलाके में गुरूजी श्री सुशील कुमार मेहता जी का साई निवास नाम से घर है जहाँ से पिछले 25 वर्षों से दु:खी इंसानों को आकर अपने कष्टों का निवारण करवा के जाते हुए देखा है। ऐसे ही मैं भी एक दुखियारण थी जो पिछले 7 वर्षों से शारीरिक व आर्थिक कष्टों से दुखी थी। लेकिन आज में बिलकुल स्वस्थ हूँ और आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी हो गयी है। मगर यह सब हुआ कैसे, गुरूजी श्री सुशील कुमार मेहता जी से मिलना, उनकी मुझ पर कृपादृष्टि मात्र से ही जीवन सुखमय होना, यह सब कैसे संभव हुआ इन्हीं सब बातों को लेकर मैं आज आपको श्री साई सुमिरन पत्रिका के माध्यम से बताने जा रही हूँ। जो बहुत बड़ा मेरी ज़िंदगी का अनुभव है और सभी को प्रेरणा देने वाला किस्सा है जो इस बात का अनुभव कराता है की भगवान के घर देर है अंधेर नहीं है।

जैसा कि मैंने पहले बताया कि मेरे पति MTNL में कार्यरत हैं और गुरूजी के घर के ठीक बाहर एक खम्बा लगा हुआ था जो उनको दिक्कत दे रहा था उनके आने-जाने में व संगत के लोगों के आने-जाने में कितनी बार कुछ लोगों को जो बुजुर्ग हैं या टाँगों से चलने से लाचार हैं, उन्हें गुरूजी के घर में प्रवेश करने में बड़ी कठनाई होती थी। उसी खम्बे को हटाने के लिए गुरूजी के बड़े बेटे जो दिल्ली उच्च न्यायालय में वकील हैं, मेरे पति के ऑफिस में उस खम्बे को हटवाने की दरखास्त लेकर गए तो मेरे पति ने उनकी दरखास्त मंजूर की और अगले दिन अपने कुछ कर्मचारियों सहित खम्बे को हटाने के लिए गए। वहां जाकर उनकी मुलाकात गुरूजी से हुई तो गुरूजी के पहनावे को देखते हुए मेरे पति ने उनसे पूछा की आप नेता हैं क्या? गुरूजी मुस्कुराकर बोले नहीं। तो फिर उनके बेटे ने मेरे पति को बताया कि डैडी नेता नहीं हैं। इतने में गुरूजी ने मेरे पति से पूछ डाला की आपकी पत्नी पिछले 7 साल से इस बीमारी से पीड़ित हैं क्या? गुरूजी के मुख से यह सुनकर मेरे पति हैरान हो गए कि इस इंसान से मेरी पहली मुलाकात है और इन्होंने मेरी पत्नी के बारे में एकदम सच कैसे बता दिया, वो भी उन्हें देखें बिना। क्योंकि मेरी पत्नी तो इस वक्त अपने घर मुरादनगर में थी तो कोई इंसान किसी को बिना देखे इतनी दूर से किसी के बारे में इतना सच कैसे जान सकता है। कुछ देर तो मेरे पति ने गुरूजी को बड़ी हैरानी से देखा और फिर मेरे स्वस्थ होने का गुरूजी से निवारण पूछा तो गुरूजी ने कहा कि मुझ पर साई की बड़ी असीम कृपा है जिनके आशीर्वाद मात्र से ही यहाँ आने वाले सभी दुखी इंसानों का दु:ख क्षण भर में ठीक हो जाता है। ऐसी मेरे साई ने मेरे हाथ में शिफा दी है।

आप जब चाहो अपनी पत्नी को मेरे पास ले आना फिर आप साई की रहमत देखना जिनकी कृपया से आपकी पत्नी बिलकुल स्वस्थ हो जायेंगी। ऐसी बात सुनकर मेरे पति ने फौरन मुझे घर फोन करके कहा कि आप बेटे को लेकर तुरन्त गीता कॉलोनी आ जाओ, आज आपके रोगों का अंत हो जायेगा। पति के मुख से यह सब बातें सुनकर मैं कुछ समझी नहीं और कहा कि आप क्या कह रहे हो, क्या हो गया है, आप किसी डॉक्टर से मिले हो क्या, उनके बारे में बताओ तो सही। मेरे से इतना सुनते ही मेरे पति झल्ला कर बोले कि मेरे से बहस मत करो और तुरन्त चले आओ। मैं मारे डर के उसी वक्त बेटे को लेकर चल दी और शाम को 5:30 बजे गीता कॉलोनी पहुँच गयी। गुरूजी से मुलाकात की। उनको सारी दास्ताँ पहले ही मेरे पति बता चुके थे। मुझे देखकर गुरूजी ने कहा, बेटाजी आपको अब कोई दवा खाने की ज़रुरत नहीं पड़ेगी क्योंकि आपके ऊपर किसी नकारात्मक शक्ति का असर है जिसकी वजह से आपके शरीर में अनेकों बिमारियों ने घर कर लिया है। और आप पर किसी दवाई का भी असर नहीं हो रहा है और स्वस्थ्य दिन प्रतिदिन और बिगड़ता जा रहा है। यह केवल आशीर्वाद मात्र से ही ठीक हो जायेगा क्योंकि साई की शक्ति के आगे किसी नकारात्मक शक्तियों का टिक पाना संभव नहीं है। गुरूजी के मुख से यह बात सुनकर मैं बहुत खुश हो गयी और गुरूजी ने जल की एक बोतल में कुछ मंत्र पढ़कर दी और उससे नहाने और पीने में इस्तेमाल करने को कहा। फिर गुरूजी की हर आज्ञा का पालन करने का वायदा करके हम जल लेकर घर आ गए और उसे नियमानुसार इस्तेमाल करते रहे। फिर क्या हुआ कि अगले दिन से ही मैं बिलकुल स्वस्थ रहने लगी और आज तक स्वस्थ हूँ। उसी दिन से हम गुरूजी की शरण में आ गये और उनका आशीर्वाद लेने और आभार प्रकट करने जाते रहते हैं। ऐसे गुरु को मेरा शत् शत् नमन। जय साई राम।

-राजरानी मुरादनगर

साई को मानो और साई की मानो

साई गुरू, पिता, माता, सखा क्या कहूं, बाबा के साथ आप जो रिश्ता बनाओ बाबा उसे निभाते हैं। साई जी क्या हैं ये बताने की ज़रूरत नहीं क्यूंकि साई के बच्चे जानते हैं कि साई क्या हैं। वो बात अलग है कुछ लोग भ्रांतियां फैलाते हैं। पर उससे बाबा और बाबा के बच्चों पर कोई फर्क नहीं पड़ता। साई जी ने हमेशा अपने वचनों में जुड़ाव सिखाया, मदद करनी सिखाई और ये एहसास कराया कि मैं हूं और हमेशा रहूंगा और जब भी कोई भक्त पुकारेगा मैं आऊंगा। पशु पक्षियों की सेवा करना साई ने बताया। आज हम सब साई भक्तों की साई को इस कथनी को अपनाने की ज़रूरत है। शब्दों में ही नहीं कर्मों में भी। हम साई को मानते हैं पर कभी कभी उनकी कथनी को नहीं मानते। ये मैं इसलिए कह रही हूं क्योंकि कई बार ऐसा देखा है। बस ज़रूरत यही है कि हम अपने साई को मानते हुए उनके कहे शब्दों वचनों को भी माने। समय बदलेगा, युग बदलेगा पर मेरा साई कभी नहीं बदलेगा। ओम साई राम।

-संगीता ग्रोवर

मीरजापुर में बाबा ने की पालकी की सवारी

साई संध्या मे झूमकर नाचे भक्तगण साथ ही भंडारे के लिए जुटी भारी भीड़

मीरजापुर: मीरजापुर नगर के रैदानी कालोनी (रया घाट) स्थित श्री साई आंचल मंदिर में फाल्गुन महोत्सव का आयोजन किया गया। श्री साई परिवार सेवा संगठन के तत्वावधान मे दो दिनों तक चले कार्यक्रम में विविध आयोजन किए गये जहां उत्तर प्रदेश के बाहर से भी आकर लोगों ने बाबा का आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम की शुरुआत 22 मार्च 2025 को की गई जहां शाम को 108 बार श्री हनुमान चालीसा पाठ पढ़ा गया जो देर रात तक चला। दिनांक 23 मार्च को सुबह 8 बजे सुशील पंडित जी के नेतृत्व में हवन किया गया। उसके पश्चात दिल्ली से आए साई भक्त एवं शिरोमणि साई ज्ञानेश्वरी के लेखक एवं कथावाचक राकेश जुनेजा जी और गायिका अंजली थापा ने संगीतमय श्री साई ज्ञानेश्वरी कथा की प्रस्तुति दी जिन्हें सुनकर भक्तगण भाव विभोर हो गए। इसके तुरंत बाद चंडीगढ़ से आई संस्था की संरक्षक एवं महामण्डलेश्वर श्री सोनाक्षी मंडल एवं त्रिमुहानी गुरुद्वारा के महंत श्याम सुंदर शास्त्री एवं संस्था के अध्यक्ष शुभम गुप्ता के नेतृत्व में वंदना राय, दिव्या सचान, आशीष श्रीवास्तव की देखरेख में बाबा की पालकी शोभायात्रा निकाली गई जो साई आंचल मंदिर बरिया घाट से शुरु होकर वासलीगंज, खजांची चौराहा, घंटाघर, बसनई बाज़ार, त्रिमुहानी, तिवरानी टोला, बाबा घाट, सुंदर घाट होते हुए वासलीगंज, संकट मोचन मार्ग, रामबाग, रैदानी कालोनी श्री साई आंचल मंदिर वापस पंहुची। पालकी में हाथी, ऊंट, घोड़े, डी.जे., बैंड बाजा, ढोल-ताशे इत्यादि के साथ भक्तजन नाचते झूमते हुए चले। जगह जगह स्थानीय लोगों के द्वारा बाबा का पूजन किया गया, साथ ही शर्बत, ठंडाई, जलपान आदि वितरित किया गया। कई जगह शोभा यात्रा पर फूलों की वर्षा भी की गई। शोभा यात्रा समाप्त होते ही भंडारा शुरू हो गया। हज़ारों भक्तों ने बाबा का प्रसाद ग्रहण किया। इस दौरान शिवम जायसवाल, अतुल अग्रवाल, स्नेहिल सिंह, राजीव नागपाल, अमित गुप्ता, बंटी दुबे, ओजेश नागपाल, लिपिका राऊत के नेतृत्व में सेवादारों की टीम देर रात तक भंडारा स्थल पर सेवा करती रही। इसके साथ ही साई संध्या कार्यक्रम के तहत फरीदाबाद से आये सुप्रसिद्ध गायक सचिन शर्मा, ओबरा से आए सुदर्शन मित्तल एवं विनीत, काशी से आई नेहा अग्रवाल सहित मीरजापुर के प्रसिद्ध गायक भानु सिंह, सुशील मौर्या (सुशील पागल) इत्यादि ने भक्ति गीतों सहित होली गीतों से माहौल को खुशनुमा बना दिया। इन सुप्रसिद्ध गायकों सहित लवकुश गुप्ता, प्रदीप गुप्ता, इश्मीत सरदार, अरविंद पांडेय, मंटू मौर्या, मोहम्मद आलादीन, मोहम्मद जावेद, हारुन अंसारी के जोरदार प्रदर्शन से मंदिर परिसर में उपस्थित भक्त नाचते झूमते और एक दुसरे पर फूल बरसाते नज़र आए। अमित झांकी ग्रुप के कलाकारों ने राधा-कृष्ण की झांकी के साथ ही कई भक्ति गीतों एवं होली गीतों पर शानदार नृत्य पेश किया। इन कलाकारों के गीतों पर भक्त झूम उठे। पूरा मंदिर भक्तों से खचाखच भरा था। गीत-संगीत, नृत्य से बहुत ही सुंदर माहौल उत्पन्न हो गया था और मंदिर परिसर में उपस्थित सभी भक्त भक्तिरस में डूबे हुए थे। शेज आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस दौरान साई आंचल मंदिर के संस्थापक राजीव नागपाल, राजेश गुप्ता, ज्योति गुप्ता एवं श्री साई परिवार सेवा संगठन के अध्यक्ष शुभम गुप्ता ने आए हुए सभी अतिथियों, कलाकारों सहित स्थानीय कलाकारों का भी माल्यार्पण कर अंगवस्त्र से सम्मानित किया और प्रतीक चिन्ह के रुप में साई बाबा की तस्वीर भेंट की।

-अरूण मिश्रा, मीरजापुर

साई मन्दिर सारसौल अलीगढ़ में रंगारंग होली महोत्सव सम्पन्न

अलीगढ़: सिद्धपीठ मन्दिर श्री साई बाबा सारसौल जी.टी. रोड पर गुरूवार को भव्य होलिकोत्सव, रंगारंग कार्यक्रम होली खेलो साई के संग सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भक्तगण होली के रंग में ऐसे झूमे कि बाबा का पूरा दरबार रंग बिरंगे फूलों से पट गया। सायं चार बजे भव्य कार्यक्रम शुरू हुआ। बाबा का दरबार फूलों व रंग बिरंगे गुब्बारों से सजाया गया। साथ ही बाबा होली की रंग बिरंगी चादर पहने अपने भक्तों को आशीर्वाद दे रहे थे। यहां पर श्री शिरडी साई भजन मण्डल से अशोक सक्सैना, कुलदीप सक्सैना, कैलाश व सहयोगियों ने रंग बिरंगी होली के गीतों व भजनों का गायन किया। वहीं होली के गीत और मल्हार सुनकर भक्तगण जमकर थिरके और पूरा वातावरण होली के रंग में रंग गया साथ ही भक्तगणों ने खूब फूलों की होली खेली। खास बात ये है कि इस अवसर पर मन्दिर के 20वें साई परिक्रमा महोत्सव में जिन साई सेवकों ने बाबा की सेवा की थी उन सभी सेवकों को मन्दिर समिति द्वारा सम्मानित किया। देर रात्रि तक चले कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में भक्तगण आते रहे व बाबा की जय जयकार करते हुए आशीर्वाद पाते रहे। इस कार्यक्रम का संचालन संस्थापक अध्यक्ष धर्मप्रकाश अग्रवाल ने किया व सचिव राजकुमार गुप्ता ने सभी का आभार व्यक्त किया। इसके अलावा बाबा का भण्डारा प्रसाद पूरे दिन बंटता रहा। कार्यक्रम में मन्दिर के संस्थापक अध्यक्ष धर्मप्रकाश अग्रवाल और सचिव राजकुमार गुप्ता के अलावा राजा राजानी, राकेश बत्रा, प्रदीप अग्रवाल, रवि प्रकाश अग्रवाल, गिरीश गोविल, रमन गोयल, हरपाल अरोड़ा, ओमेन्द्र माहेश्वरी, विदित अग्रवाल, नितिन जिंदल,पंकज धीरज, विष्णु कुमार बंटी, विनायक अग्रवाल, सुनील मित्तल और संदीप सागर का विशेष सहयोग रहा।

-धर्म प्रकाश अग्रवाल

होली पर सक्सैना बंधु द्वारा भजन

दिल्ली: होली के अवसर पर साई मंदिर, प्रेम नगर और साई मंदिर, लोधी रोड में श्रद्धेय सक्सैना बंधु ने भजनों का गुणगान किया। साई मंदिर प्रेम नगर में श्रद्धेय सुरेन्द्र सक्सैना जी ने सर्वप्रथम धुनि पूजन किया। कई भक्तों ने अपने कष्ट निवारण हेतु उनसे धूनि पूजन करवाया। श्री अमित सक्सैना जी ने भजनों का शुभारंभ किया और अनेक मधुर भजन सुनाये। उसके बाद श्रद्धेय सुरेन्द्र सक्सैना जी ने ब्रज की होली के कई भजन सुनाए। उन्होंने प्राचीन कथा भी सुनाई जिसमें कृष्ण एवं राधा की कथा का वर्णन किया। भक्तों ने उनके भजनों का आनन्द लेने के बाद भंडारे प्रसाद का आनन्द लिया।

दिनांक 13 मार्च 2024 को शिरडी के समाधि शताब्दी मंडप पर साई सिसौदिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भी सक्सैना बंधु ने अपने भजनों की अमृत वर्षा की।

इसके अतिरिक्त दिनांक 23 मार्च 2025 को श्रद्धेय सुरेन्द्र सक्सैना बंधु जी ने साई बाबा मंदिर, हैदरनगर, मुज़्ज़फरनगर में धुनि पूजन करवाया जहां बहुत से भक्तों ने अपने-अपने कष्टनिवारण हेतु पूजा करवाई।

सिनेमा जगत के कलाकार फराह खान और राजकुमार राव ने शिरडी में श्री साईबाबा के दर्शन किये। दर्शन करने के बाद उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री भीमराज दराडे जी ने उनका स्वागत किया। इस अवसर पर मंदिर विभाग के प्रमुख श्री विष्णु थोरट में मौजूद थे।

Sahasranama for Interaction of Mind & Body

The Fakir asks from only those to whom He is indebted.

–Shri Sai Satcharita (Chapter 35, Ovi 129–131)

The Self which acts in humans is itself moved by forces which have long been familiar to common sense, without being understood, except dramatically. These forces are called passions. When the dramatic units are longish strands rather than striking episodes, they are called temperament, character, or will. Weaving all these strands and episodes together into one moral fabric, we call them, simply, 'human nature'. But where does this human nature reside, and how does it operate on the non-human world? It certainly does not operate in the conscious sphere, or in the superficial miscellany of experience. Immediate experience is the intermittent chaos where human nature, in combination with external circumstances, is invoked to support and to rationalise. Is human nature, then, resident in each individual soul? Certainly but the soul is merely another name for that active principle which we are looking for, to be the seat of our sensibility and the source of our actions. Is this psychic power, then, resident in the body? Undoubtedly, since it is hereditary and transmitted by a seed, and continually aroused and modified by material agencies.

Since this soul or Self in the body is so obscure, the temptation is great to dramatise its energies and to describe them in myths. Myth is the usual way of describing those forces of nature which we cannot measure or understand; if we could understand or measure them, we would describe them analytically in what is called science.

The 18th shloka of Vishnu Sahasranama is:

Vedyo Vaidyah Sadayogi Veeraha Madhavo Madhuhu Ateendrio Mahamayo Mahotsaho Mahabalaha

Lord Vishnu is Vedya– the knowable, and Vaidya– knower, at the same time Sadayogi– an eternal yogin. This Madhav– lord of knowledge, gives Madhu– sweet honey. He is Ateendria – beyond all senses, is Mahamaya – a great illusionist, Mahotsaha – full of energy, and Mahabala– great strength.

Sai Baba sent word with Appa Kulkarni to Nana Saheb Chandorkar to visit Shirdi. Nana Saheb ignored Baba's message. Nana Saheb decided to go to Harishchandragad, a hill close to Kopergaon. There was a Devi shrine on top of the hill and Nana Saheb wanted to visit it. It was a difficult climb but both Nana and his orderly, Ganesh Rao, were confident they would be able to manage.

Soon they felt the hot sun and the unbearable heat. There was not even a single tree for shade. It was all rocks and climbing through steep, zigzag turnings. Both were exhausted and the water they carried was over. Thirst and exhaustion made Nana Saheb tremble and gasping for breath, he found it impossible to continue.

Nana Saheb started feeling guilty. Were his troubles because he was indifferent to Sai Baba? Without a drop of water to quench his thirst, he felt that his end was near.

Just thinking of Sai Baba by Nana Saheb was enough. Sai Baba at Shirdi understood his condition. Baba told Appa Kulkarni who had returned from Kopergaon that Nana Saheb was dying for want of water. Appa offered to run for his assistance. 'No, no, Nana Saheb is far away. Let me see what I can do,' said Baba. He also advised Appa Kulkarni, 'Go home and take rest. Think of God Think of God now!' Appa wondered about Baba's advice.

On the hill, Ganesh Rao was very worried. Nana Saheb's condition was critical. Nana could not climb up, nor go down. He himself was too exhausted to carry Nana on his back. Just then he saw a Bhil tribal coming near them. Nana Saheb pleaded for water. The tribal was about to go and fetch it, but Ganesh Rao commented to Nana Saheb that the tribal was an untouchable and how he could accept water from him.

The Bhil was furious. He said, 'You brute, this man is dying and you are thinking of touchable and untouchable. Only you people are dividing man and man! God did not create any division.' Curtly he turned to go.

Ganesh Rao realised his blunder and requested help. The Bhil said, 'Remove the boulder on which your friend is lying. There is water below it.' Ganesh Rao quickly moved the boulder. And there was a spring of water! He quenched Nana's thirst and then drank some water himself. When they looked up to thank the Bhil, he was nowhere to be seen. He had vanished.

This was the turning point in Nana's mind. From that moment onwards, he started looking forward to visit Sai Baba. Back in the mosque, Baba told the people around Him, 'Nana was thirsty. I have given him water.'

-to be contd...

-Dr. Vijayakumar

Courtesy: An Insight into Vishnu Sahasranama through Sai Baba

Published by: Sterling Publishers Pvt. Ltd.

Our Associates

Singapore - Naina
U.S.A. - Anil Chadha
Dr. Rangarao Sunkara
Ohio - Varaha
Florida -Kamal Mahajan
Brampton
Devendra Malhotra
Australia - Anibha Singh
New Zealand -Anjum Talwar
Japan -Kaco Aiuchi
Canada
Ruby Kaur, Smita Sohi
Germany
Sugandha Kohli
Sri Lanka
S.N. Udhayanayahan
Nepal
Vishnu Pokhrel,
Madhu

108 Names of Shri Saibaba

by Satya Shri Sant Vivek Ji

It is my staunch belief that reading or listening of Sai Sanjeevni (108 names of Sai Baba) will dispel all doubts of devotees & remove miseries and sorrows from their lives. They will definitely realise the Self and be One with Shri Sai.

Om Shri Sai Kamadi-Shad-Vairi-Dhvansine Namah

Gratification of any worldly desire is sinful. Sai destroys all worldly desires of his devotees. A man cannot experience the eternal peace until he has tamed his ego and his mind is pure and pious. Mind can become stable only after leaving desire, anger, greed, hatred, pride and lust. Proper conduct is a prerequisite for self realisation. When a devotee thinks that whatever he gets in this world is not his and not for him, then the fascination toward matter is destroyed. This leads to detachment. When he is detached from worldly desires he becomes fearless. When greed is destroyed he becomes content. But all this is possible only when mind is in control. One who has surrendered unto Sai can easily master the art of controlling the mind through intellect. My humble salutation to Shri SAI who destroys Desire, Anger, Greed, Hatred, Pride and Lust.

Sai Is Always With Us

Every successful man I know has countless stories of struggle in his life. When struggle turns into strength, then you can succeed. In 31 years of my professional career, I have faced many ups and downs. Every challenge has shaped me into the man, I am today. I was harassed, disregarded, humiliated, not taken seriously and was underestimated. These hurdles can halt someone temporarily but not permanently. Every time I fell, then Sadguru Sai Maa came to my rescue and held me in his lap. Whenever I was shattered and felt broken then I received messages of assurance from Sadguru Sai Baba through various Whatsapp groups, which encouraged me. During the extremely difficult times when I lost all my patience (saburi) then Sadguru Sai gave me strength by lessons of Saburi. I was in very odd situation in the recent past and no one helped me except Sadguru Sai Baba, my family, my wife Sudha, my children, my close friends & some Sai devotees. Also articles of Shree Sai Sumiran Times tought me that Baba is always with me. The path to success may be difficult, but you have to believe in yourself and have faith in Sai Baba. One thing I must mention that there is no shortcut of success. You have to follow the right path in life.

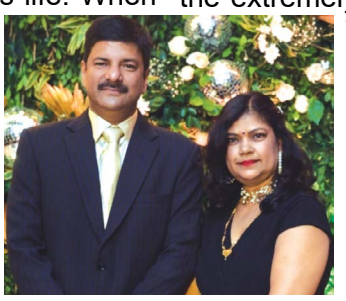

Thursday is a very special day for our family. It is auspicious day for us as many miracles happened with me on Thursdays. Whenever I have to start any new thing or some experiment on new project, then I choose Thursday. Also, I always get good news on Thursdays only.

I pray to Sadguru Shri Sai Baba to bless my family and all Sai devotees. Om Sai Ram.

-Balram Gupta,
Buxar, Bihar

E-Bike Donated to Shirdi Sansthan

Shirdi: M/s. Sina E-Bike Company donated its E-Bike to Shri Sai Baba Sansthan at a funtion held on 14th March 2025. Ritualistic puja of the bike was performed on behalf of Sansthan on the occasion. On this occasion, the MD of M/s. Sina E-Bike Company, Shri Santosh Jnaneshwar Udavant handed over the keys of the two-wheeler to Deputy Chief Executive Officer Shri Bhimraj Darade. After that, the donors were felicitated by Shri Bhimraj Darade. On this occasion, Aadministrative officer Shri Sandeep Kumar Bhosale, head of vehicle department Shri Atul Wagh and other dignitaries were present.

Shree Sainatha Gnyana Mandira

Bangalore: Shree Sainatha Gnyana Mandira, Bhatrenahalli, Mallur, Bangalore is very famous and known as center of devotion. In this temple everyday the program starts with Kakad aarti at 6 AM, after aarti mangal snan and abhishek is performed. After that alankar, mahamangal aarti is performed and prasad is offered to Sai Baba. After that darshan starts for all devotees. At 12:00 pm aarti is recited and prasad is distributed. In the evening at 6:00 pm dhoop aarti, and at 8:00 pm. prasad is offered to Baba, The temple closes after the Shej aarti.

On Thursdays different programs are organised. The temples opens at 5:30 AM, Kakad aarti agnihotri homa, mangle snan, abhishek, prasad is offered to Sai Baba. Huge crowd of devotees come on Thursdays for darshan. At 12:00 pm devotees gather for noon aarti. Distribution of mahaprasad starts after aarti from 12:30 pm and continues till 9:00 pm. On Thursday and all other special days mahaprasad is distibuted.

In the evening from 4:00 pm to 5:45 pm Vishnu Sahastranaama and Lalitha Sahastranaama is recited by all female devotees. At 6:00 pm doop aarti, and agnihotri homa is performed. Every Thursday peogram of Sai bhajans is organised till 9 o'clock. A Palki procession is also taken out on Thursdays. The temple closes after Shej aarti.

-M. Narayanaswamy

Shri Sai Baba Sansthan Celebrates Holi & Gudi Padwa

Shirdi: Shri Sai Baba Sansthan celebrated Holi Festival on 13th March 2025. On this occasion, in front of Shri Gurusthan Temple, Sansthan Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar and his wife Smt.Vandana Gadilkar performed riutalistic Holi puja and lit the Holi. On this occasion, Sansthan Deputy Chief Executive Officer Shri Bhimraj Darade, Administrative Officers Shri Sandeep Kumar Bhosale, Smt.Pragya Mahandule-Sinare, Temple Head Shri Vishnu Thorat, Public Relations Officer Shri Tushar Shelke, temple priests, Shirdi villagers and Sai devotees were present in large number.

Samadhi Mandir and its surroundings were beautifully deocated with attractive flowers on Holi with the generous donation from Sai devotee from United Kingdom Shri Akhil Gupta, and by Taresh Anand from USA, on Gudi Padwa

On 30th March, on the occasion of Gudhi Padwa festival, Mr. Goraksh Gadilkar, CEO of Shri Saibaba Sansthan and his wife Mrs. Vandana Gadilkar performed Gudhi puja to Shri Saibaba temple on the Kalsa. Shirdi Santhan's Chairman and Chief District and Session Justice Mrs. Anju Shende (Sontakke), Deputy CEO Mr. Bhimraj Darade and his wife Mrs. Vaishali Darade, Mr. Avinash Kulkarni, Temple Division Chief Mr. Vishnu Thorat and Public Relations Officer Mr. Tushar Shelke were also present.

-Courtesy : Shirdi Sansthan

TVS Max EV Electric Rickshaw Donated to Shirdi Sansthan

Shirdi: With the aim for providing more facilities in the service of Shri Sai Baba Sansthan Trust, M/s. TVS Company donated a 3-wheeled electric rickshaw, TVS MAX EV on 5th March 2025. After performing the ritualistic puja to the vehicle on behalf of Sansthan, M/s. TVS Motors CEO Shri K. N. Radhakrishnan handed over the key of the vehicle to Shri Sai Baba Sansthan CEO Shri Goraksh Gadilkar. Shri Goraksh Gadilkar felicitated Shri K.N. Radhakrishnan with a shawl and a Shri Sai Baba's idol. The event was attended by M/s. TVS Company's Regional Sales Manager Shri Manpreet Singh Chhabra, Service Regional Manager Shri Saurav Ghorai, Area Manager Shri Ashish Jaiswal, as well as Sansthan's Deputy Chief Executive Officer Shri Bhimraj Darade, Administrative Officers Shri Sandeep Kumar Bhosale, Shri Vishwanath Bajaj, Executive Engineer Shri Bhikan Dabhade and Head of Vehicle Department Atul Wagh.

It is noteworthy to mention here that M/s.TVS Company has already donated 11 two-wheelers and 2 three-wheelers to Shri Sai Baba Sansthan. Shri Sai Baba Sansthan expressed its special gratitude to M/s. TVS Company for their cooperation.

-Nilesh Sanklecha

Hail Sai Chaitanya Mahaprabhu

As Sai Bhaktas very well know, this child of Baba has been writing here about Him. In this regard, the perspective of His being manifestation of Lord Krishna is often emphasised. Hence it becomes imperative to write about Lord Sai while celebrating the Holi festival, which was on 14 March last month. The festival is closely associated with Lord Krishna and Sri Radharani. The very mention of these Names also brings to mind the memories of Lord Chaitanya Mahaprabhu. He is worshipped as the unified form of Sri Radha Krishna. He appeared on the day of Holi. So it is quite natural to talk here about Sai appearing as Chaitanya Mahaprabhu.

Sai Chaitanya Mahaprabhu, the great apostle of love of God and the father of congregational chanting of the holy name of the Lord, advented Himself at Sridhama Mayapura, a quarter in the city of Navadvipa in Bengal, on the Phalguni Purnima evening in February 1407 Sakabda (corresponding to February 1486 by the Christian calendar). He came then as one of the top Acharyas of the bhakti schools of Vedanta that preached pure devotion. His entire life, preaching and teachings at that time were full of divine love towards Lord Krishna.

The highest form of transcendental worship of the Lord was exhibited by the damsels of Vrajabhumi in the form of pure affection for the Lord Krishna. Sai Chaitanya Mahaprabhu recommended this process as the most excellent mode of worship. He accepted the Srimad-Bhagavata Purana as the spotless literature for understanding the Lord, and he preached that the ultimate goal of life for human beings is to attain the stage of prema, or love of God.

The teachings of Sai Chaitanya Mahaprabhu were practical demonstrations of teachings as presented in the Bhagavad-gita. Lord Sai Krishna's ultimate instruction in Bhagavad-gita is that everyone should surrender unto Him. Lord Sai Krishna promises to take immediate charge of such a surrendered soul. According to Sai Chaitanya Mahapradhu: "In this age of Kali there is no other religion but the glorification of the Lord by utterance of His holy name, and that is the injunction of all the revealed scriptures. Sai Chaitanya Mahaprabhu left only eight slokas of His instructions in writing, and they are known as the Siksastaka. These eight slokas completed by the Lord are as follows:

Glory to sankirtana (congregational chanting), which cleanses the heart of all the dust accumulated for years and extinguishes the fire of conditional life, of repeated birth and death. This sankirtana movement is the prime benediction for humanity at large because it spreads the rays of benediction moon. It is the life of all transcendental knowledge. It increases the ocean of transcendental bliss, and it enables us to fully taste the nectar for which we are always anxious.

Holy name alone can render all benedictions to living beings, and thus You have hundreds and millions of names. In these transcendental names You have invested all Your transcendental energies. There are not even hard and fast rules for chanting these names. O my Lord, out of kindness You enable us to easily approach You by chanting Your holy names, but I am so unfortunate that I have no attraction for them. One should chant the holy name of the Lord in a humble state of mind, thinking oneself lower than the straw in the street; one should be more tolerant than a tree, devoid of all sense of false prestige, and ready to offer all respect to others. In such a state of mind one can chant the holy name of the Lord constantly.

O, Almighty Lord, I have no desire to accumulate wealth, nor do I desire beautiful women, nor do I want any number of followers. I only want Your causeless devotional service birth after birth. Lord I am Your eternal servitor, yet somehow or other I have fallen into the ocean of birth and death. Please pick me up from this ocean and place me as one of the atoms of Your lotus feet. O my Lord, when will my eyes be decorated with tears of love flowing constantly when I chant Your holy name? When will my voice choke up, and when will the hairs of my body stand on end at the recitation of Your name? Feeling separation from You, I am considering a moment to be like twelve years or more. Tears are flowing from my eyes like torrents of rain, and I am feeling all vacant in the world in Your absence.

I know no one but You as my Lord, and He shall remain so even if He handles me roughly in His embrace or makes me brokenhearted by not being present before me. He is completely free to do anything and everything, for He is always my worshipful Lord unconditionally.

Throughout the ages, many avatars – divinely inspired teachers and incarnations of God have appeared in the world, but none has ever distributed spiritual love as freely as the Golden Avatara, Sai Chaitanya Mahaprabhu. Just as the moon was produced by the churning of the sea, by the churning of spiritual love affairs the moon of Sai Chaitanya Mahaprabhu appeared. Indeed, Sai Chaitanya Mahaprabhu's complexion was golden, just like the moon.

Rising above the narrowly defined organizational, religious, social, geographical and other vicious restrictions, the lesson that emerges is that we must contemplate on how to go forward on the path of love and devotion as taught by Sai Chaitanya Mahaprabhu. We know very well how since His advent in Shirdi, Sai has been worshipped as Lord Krishna Himself. So Devotee and Deity became One for our good. Hail Sai Chaitanya Mahaprabhu! Hail Lord Sai Radha Krishna!

(Acknowledgement: Based on the book, 'Lord Caitanya: His Life and Teachings' by Srila Prabhupada, published by The Bhaktivedanta Book Trust.) **-Tish Malhotra**

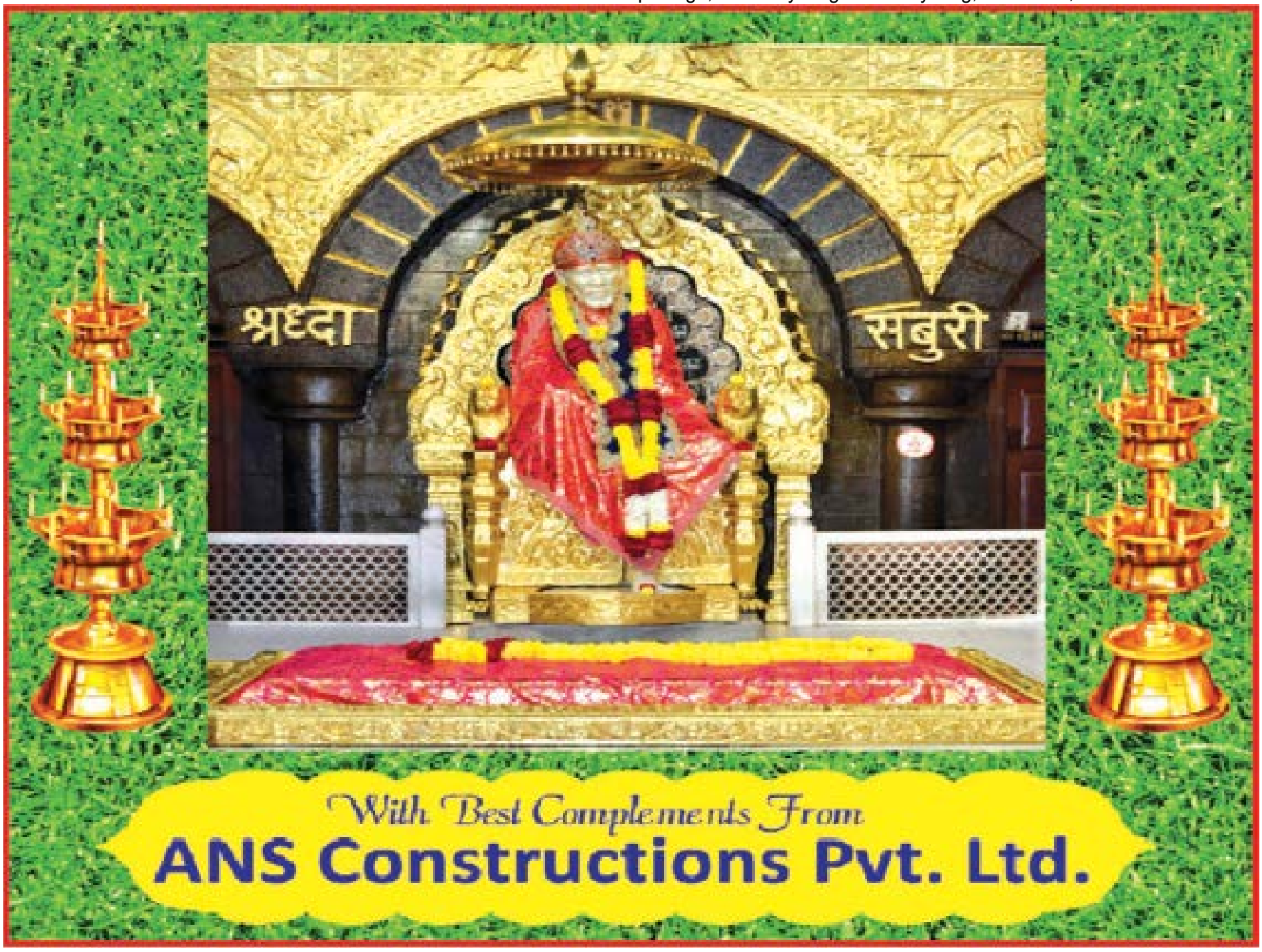

With Best Compliments From
ANS Constructions Pvt. Ltd.

A Tribute to Dr. G. R. Vijayakumar

On 14th March, 2025, Well known author Dr. G. R. Vijayakumar merged into Baba's feet forever. He was not feeling well and was ill for sometime. He wrote many books on Sai Baba & his contribution can never be forgotten. His books: '*They Lived with the Loving God'; 'The Loving God Story of Shirdi Sai Baba'; 'Sri Narasimha Swami Apostle of Shirdi Sai Baba'; 'An Insight into Vishnu Sahasranama through Sai Baba'* etc. (Published by Sterling Publishers Pvt. Ltd.) are very popular. His books will give the reader a deeper insight into Sai Baba's life, His code of conduct, words of wisdom and also the innumerable miracles He performed. The work on Sai Baba will certainly enrich Sai literature. The books written by him help one develop faith in spiritual truth and encourage one to lead a righteous and spiritual life.

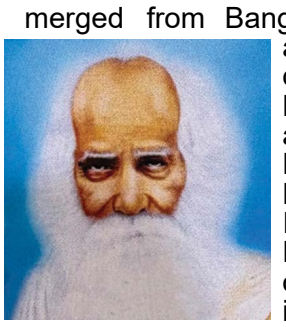

Dr. G.R. Vijayakumar, born in 1949, is a widely-known and distinguished name among Sai devotees across the country as more than 3,000 of his articles and poems on Sai Baba have been published in different magazines since 1977.

He holds an MBBS and MD from Bangalore University and a Doctoral degree from Sri Lanka, apart from PG Diplomas in Nutrition and Industrial Health. He obtained a PhD in 2018 from Madurai Kamaraj University for his dissertation on Vishnu Sahasranama. He was the Principal and Professor in Community Medicine at the All India Institute of Local Self Government Bangalore, connected to the Rajiv Gandhi Health University in Karnataka.

He was awarded the Governor's Gold Medal in 2002 for 107 blood donations, a national award from USAID in 2004 for his work on AIDS, the Henry Dunant award from Red Cross in 2010 and a National award for Medical Teachers in 2016. He has travelled all over the world.

We pray to Sai Baba, may his soul rest in peace.

-Surendra Ghai

For Daily Shirdi Darshan & Experiences of Devotees
Subscribe and Like Youtube Channel of Shri Sai Sumiran Times
https://youtube.com/@shrisaisumirantimes3022

Medical Equipment Worth Rs.21 Lakhs Donated to Shri Sai Baba Hospital

Sai devotees Shri Hasija Rajeev Kumar, Shri Hasija Manu, Shri Mohit Jaidka and Smt. Vinky Lumba donated a TMT Machine and Giester Surgical Instrument Set worth Rs.21 lakhs to Shri Sai Baba Hospital on behalf of Jai Sai Foundation, Gandhidham, Gujarat.

The dedication and worship of the equipments was done in the presence of the Medical Director of Shri Saibaba Hospital, Lt. Col. Dr. Shailesh Oak (Retd.) and Deputy Medical Director Dr. Pritam Wadgave. Sansthan CEO Shri Goraksh Gadilkar felicitated the donor Sai devotees.

With these state-of-the-art devices, examinations and surgeries in the Cardiology and Cardiac Surgery departments can be performed with more effective technology, which will greatly benefit the patients. Sansthan CEO Shri Goraksh Gadilkar expressed heartfelt gratitude to Jai Sai Foundation for this invaluable contribution and also said that these kind of charitable activities are strengthening the teachings of Sai Baba.

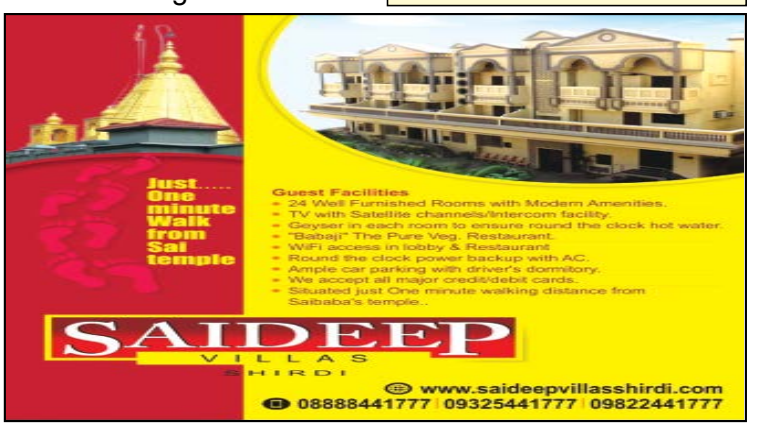

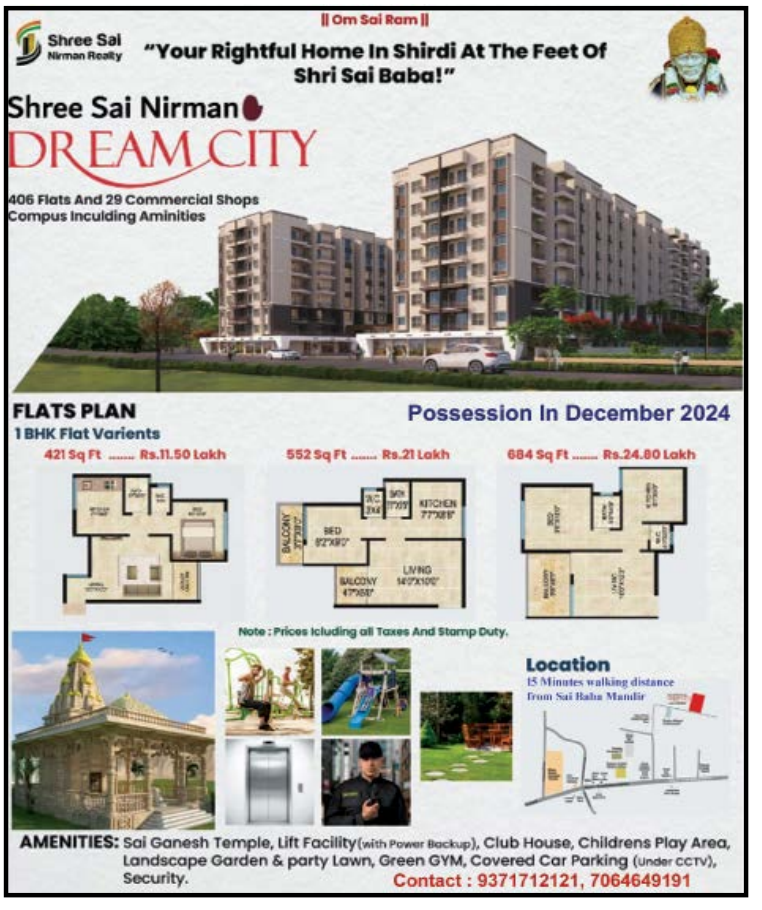

Our Associates

Agra - Sandhya Gupta
Aligarh- Seema Gupta
Ashok Saxena, D.P. Agarwal
Ambala - Ashok Puri
Amritsar- Amandeep
Ahmedabad - Arjun Vaghela
Aurangabad-Ashok Bhanwar Patil
Assam - Bidyut Sarma
Badayun - Varinder Adhlakha
Bhilwada - Kailash Rawat
Banas - P.K.Paliwal
Bareilly - Kaushik Tandon
Sapna Santoria, Prathmesh Gupta
Bhopal
Ramesh Bagre, Surendra Patel
Bangalore-Chandrakant Jadhav
Bathinda-Govind Maheshwari
Bikaner- Deepak Sukhija
Surender Yadav, Pt. Sadhu Ji
Purnima Tankha,
Bihar- Balram Gupta
Bokaro - Hari Prakash
Bhagalpur - Anuj Singh
Bhuvneshwar (Odisha)
Pabitra Mohan Samal
Chandigarh - Puneet Verma
Chennai - M. Ganeson
Chattisgarh- Nikhil Shivhare
Dehradun - H.K. Petwal,
Akshat Nanglia, Mala Rao
Dhanaula - Pradeep Mittal
Faridabad - Nisha Chopra
Ashok Subromanium,
Firozpur - P.C. Jain
Goa - Raju
Gurgaon - Bhim Anand,
Alok Pandey, Shyam Grover
Ghaziabad - Bhavna Acharya
Usha Kohli, Dinesh Mathur
Gujarat - Paresh Patel
Gwalior - Usha Arora
Haridwar - Harish Santwani
Hissar - Yogesh Sharma
Hyderabad - Saurabh Soni,
T.R. Madhwan
Indore- Dr. R. Maheshwari
Jalandhar - Baba Lal Sai
Jabalpur - Suman Soni
Chandra Shekhar Dave
Jagraon - Naveen Khanna
Jaipur - Puneet Bhatnagar
Kolkata - Sushila Agarwal,
D. Goswami
Kapurthala - Vinay Ghai
Korba - T.P. Srivastava
Kurukshetra - Yash Arora
Pradeep Kr. Goyal
Kaithal - Naveen Malhotra
Lucknow - Gayatri Jaiswal,
Sanjay Mishra, Rajiv Mohan
Ludhiana - Umesh Bagga,
Rajender Goyal, Sai Puja,
Sanjiv Arora
Mandi Govind Garh
Shunti Bhaji, Rajiv Kapoor
Mawana - Yogesh Sehgal
Meethapur - Shrigopal Verma
Meerut - Kamla Verma
Mumbai-Anupama Deshpandey
Kirti Anurag, Sunil Thakur
Moradabad - Ashok Kapur
Mussoorie- R.S. Murthy,
Surinder Singhal
Nagpur - Pankaj Mahajan,
Srinivasan, Narendra Nashirkar
Noida - Amit Manchanda
K.M. Mathur, Kanchan Mehra,
Panipat- Raj Kumar Dabar,
Sanjay Rajpal
Patiala - P.D.Gupta,
Dr. Harinder Koushal
Panchkula - Anil Thaper
Palampur - Jeewan Sandel
Parwanoo - Satish Berry,
Chand Kamal Sharma
Pune - Bablu Duggal
Sapna Lalchandani
Port Blair
J.Venkataramana, Ghanshyam
Pundri - Bunty Grover
Patna - Anil Kumar Gautam
Ranchi - Deepak Kumar Soni
Rewari- Rohit Batra
Rishikesh- S.P. Agarwal,
Ashok Thapa
Raigarh - Narinder Juneja
Roorkee - Ram Arya
Rudrapur-Naresh Upadhyaye
Shirdi - Sandeep Sonawane
Nilesh Sanklecha, H.P. Sharma
Sonepat- Rahul Grover
Sangrur - Dharminder Bama,
Sirsa-Komal Bahiya, Bunty Madan
Surat - Sonu Chopra
Udaipur - Dilip Vyas
Ujjain - Ashok Acharya
Vidisha - Sunil Khatri
Zeera - Saranjeet Kaur

मेरा साई वादा निभाता है

साई हम तेरे ही दीवाने हैं
पल-पल तुझे पुकारेगें
तू साथ है सोचकर खुश होंगे
तेरी सलोनी सूरत को ही निहारेगें

साई तू संत फकीर है
बदलता भक्तों की तकदीर है
तेरे नाम जाप मात्र से ही
खुलती कर्म बंधनों की ज़ंजीर है
रिश्ता जो बांधे साई कोई तुमसे
हर रिश्ता मेरा साई निभाता है
कोई हो चाहे सात समुंदर दूर तुझ से
पर मेरा साई हर वादा निभाता है
मेरा साई हर वादा निभाता है।

-संगीता ग्रोवर
कवियत्री, लेखिका, गायिका

श्री साई सुमिरन टाइम्स की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
Ph: 9818023070

खापर्डे परिवार के पांचवीं पीढ़ी के संजय खापर्डे से मुलाकात

इसे आप श्री साई बाबा का आशीर्वाद ही समझे कि साई सेवक एवं श्री साई सच्चरित्र ग्रंथ प्रचारक अरविंद सिंह गौर

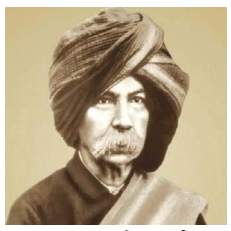

(संचालक श्री साई बाबा प्रचार केंन्द्र इन्दौर) को बाबा के आशीर्वाद से श्री साई बाबा के समकालीन भक्त श्री दादासाहेब खापर्डे के परिवार के पांचवीं पीढ़ी के श्री संजय खापर्डे (पिता गजानंद राव खापर्डे जी) से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री संजय खापर्डे जी ने बताया कि श्री दादासाहेब खापर्डे को सकुटुम्ब शिरडी में कुछ माह ठहरने और श्री साई बाबा की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

श्री गणेश कृष्ण खापर्डे उपनाम श्री दादासाहेब खापर्डे श्री साई बाबा के समकालीन भक्त कोई सामान्य व्यक्ति न थे। वे एक धनाढ्य और अमरावती के सुप्रसिद्ध वकील थे। श्री दादा साहब खापर्डे के बारे में श्री साई सच्चरित्र ग्रंथ हिंदी भाषा के अध्याय 7 एवं 27 में वर्णन किया गया है।

श्री दादा साहब खापर्डे ने लगभग 1910 में श्री साई बाबा के दर्शन किए थे इसके अगले वर्ष अर्थात 1911 श्री दादा साहब खापर्डे ने श्री साई बाबा के सानिध्य का लाभ उठाया और लगभग तीन से चार महीने शिरडी में ही रहे। इस शिरडी प्रवास की अवधि में उन्होंने श्री साई बाबा के साथ अपने दैनिक अनुभव को एक डायरी के रूप में अंग्रेजी में लिखा जिसे 'खापर्डे की डायरी' के नाम से जाना जाता है जिसका शिरडी संस्थान द्वारा इंग्लिश और हिंदी भाषा में अनुवाद करके प्रकाशन किया गया। यह पुस्तक श्री साई भक्तों के पढ़ने योग्य पुस्तक है। यह परम सौभाग्य की बात है कि आज हमें श्री दादासाहेब खापर्डे व उनके परिवार के सदस्यों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। वर्तमान में यह इंदौर स्थित सुदामा नगर में निवासरत है।

श्री संजय खापर्डे जी ने बताया कि उनका जन्म 28 मार्च 1959 को अमरावती महाराष्ट्र में हुआ। अमरावती में श्री दादासाहेब खापर्डे का मूल निवास स्थान था जिसे खापर्डे वाड़ा के नाम से जाना जाता है। उन्होंने साई सेवक अरविंद सिंह गौर को बताया कि वो श्री दादासाहेब खापर्डे की पांचवीं पीढ़ी के सदस्य हैं और हमारे दादाजी श्री दादासाहेब खापर्डे अमरावती, बरार के सुप्रसिद्ध वकील थे। वे श्री बाल गंगाधर तिलक जी के भी वकील थे। उन्होंने यह भी बताया कि हमारे दादाजी के घर पर श्री साई बाबा और शेगांव वाले श्री गजानन महाराज भी दर्शन देने के लिए आ चुके हैं उन्होंने आगे बताया कि जब कोई संत या महंत किसी के घर इस तरह दर्शन देने आते हैं तो वह अपनी कुछ यादें या स्मृति ज़रूर छोड़कर जाते हैं। उन्होंने श्री साई बाबा के दिव्य चमत्कार से मुझे अवगत कराया उन्होंने मुझे बताया कि एक बार महाशिवरात्रि के अवसर पर मैं शिरडी में समाधि मंदिर में साई बाबा के दर्शन कर रहा था, मैंने समाधि मंदिर में साई बाबा से मन ही मन महाशिवरात्रि के अवसर पर नासिक स्थित त्र्यंबकेश्वर मंदिर में दर्शन करने की अनुमति मांगी तो बाबा ने मुझे 5 मिनट रुकने का संकेत दिया और जब मैंने 5 मिनट बाद श्री साई बाबा का स्वरूप देखा तो वहां साक्षात देवों के देव महादेव मुझे दर्शन दे रहे थे। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि वो हर महीने की 30 एवं 31 तारीख को शिरडी में साई बाबा के दर्शन का लाभ उठाते हैं।

साई सेवक अरविंद सिंह गौर ने श्री संजय खापर्डे जी को श्री साई बाबा प्रचार केंद्र इंदौर के सभी प्रकल्पों की जानकारी दी और बताया कि श्री साई सच्चरित्र ग्रंथ के नियमित पारायण के तहत प्रतिदिन एक-एक अध्याय का पारायण का विश्व कीर्तिमान अभियान है और श्री साई बाबा के महामंत्र श्री साईनाथाय नमः का एक करोड़ 51 लाख मंत्रों का जाप विश्व जनजागृति अभियान है। श्री साई बाबा प्रचार केंद्र इंदौर में हिंदी भाषा का श्री साई सच्चरित्र ग्रंथ निशुल्क वितरण केंद्र बनाया गया है। मुझे उनसे मिलकर उनके प्रति श्री साई बाबा की सच्ची भक्ति और सच्चा समर्पण का एहसास हुआ। इतने दिव्य परिवार से जुड़े होने के बाद भी उनकी सरलता और पर आत्मीयता से मिलने का भाव बहुत प्रशंसा के योग्य है।

साई सेवक अरविंद सिंह गौर श्री साई बाबा प्रचार केन्द्र इन्दौर के संचालक हैं। श्री साई बाबा के दिव्य उपदेशों, ज्ञान, शिक्षाओं और श्री साई सच्चरित्र ग्रंथ के नियमित पारायण करने के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार करने में समर्पित हैं।

पुरानी चोट अथवा दर्द के इलाज हेतु तेल तथा लेप श्री साई मंदिर, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है। सम्पर्क करें- प्रीति भाटिया फोन: 9899038181

साई के भक्त अकारण भी खुश रह लेते हैं

खुशियां मन में छुपी हुई,
क्यों ढूंढे संसार।
साई शरण में जाइए,
हर्ष मिले अपार।।

खुशी के मायने क्या हैं? यह एक ऐसा सवाल है, जिसका उत्तर सबके लिए अलग-अलग हो सकता है। कोई अपने परिवार में खुशियां ढूंढता है, तो कोई दौलत-प्रसिद्धि में, तो कोई प्यार-मोहब्बत में और कोई किसी चीज़ को पाकर खुश हो जाता है। लेकिन क्या कभी आपने किसी मानसिक विक्षिप्त व्यक्ति को देखा है? वो अकारण ही खुश होता है। उसे यूं ही हंसता-मुस्कुराता देख हम उसे पागल करार दे देते हैं। क्या वाकई ऐसा है? दरअसल, जब हमारा दिमाग चलने लगता है, तो हम हर चीज़ को, हर बात को नापतौल कर देखते हैं और तब यह निर्णय करते हैं कि हमें कहां और क्यों खुश होना है लेकिन जब किसी व्यक्ति का दिमाग काम करना बंद कर देता है यानी जिसे हम पागल बोलने लगते हैं, वो अकारण खुश होता है। उसे इससे कोई सरोकार नहीं होता कि वो खुशियों के लिए कारण तलाशे। वो लोग जिनका अपने दिमाग पर 100 प्रतिशत नियंत्रण होता है वे खुश रहने के लिए बहाना क्यों ढूंढते हैं?

दरअसल, खुशियों का कारण ढूंढना भी एक मानसिक विकार है, जो हमारे ओर साई के बीच रोड़ा बनता है। साई क्या हैं? साई ही तो खुशी हैं। हम मंदिर किसकी तलाश में जाते हैं? यकीनन खुशियों की ओर किसकी! साई की शरण हमें अपने दिमाग पर नियंत्रण करना सिखा देती है। हम अकारण भी खुश रहना सीख जाते हैं।

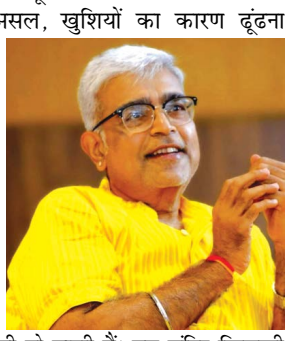

खुशियां तलाशने पर नहीं मिलती वो तो कभी भी, कहीं से भी और किसी भी चीज़ के तौर पर हमारे जीवन में आ जाती हैं। जो लोग खुशियों के लिए कारण ढूंढते हैं वे आर्टिफिशयल यानी बनावटी खुशी ही हासिल कर पाते हैं। जैसे हम बनावटी और गंधरहित कागज़ या अन्य किसी चीज़ से बने फूल खरीदकर अपने घर में सजाकर खुश होते हैं। अपनी खुशी के लिए उन पर इत्र या कोई अन्य खुशबू वाला पदार्थ छिड़क देते हैं। लेकिन असली खुशी तो असली फूल से ही मिलती है। वो फूल हमारे कहने पर या हमारी इच्छाओं पर नहीं खिलता वो अपने समय और प्राकृतिक नियमों के अनुसार फलता-फूलता है।

यदि तुम्हारे जीवन में किसी कारण से खुशी है, तो तुम कभी उसका आनंद नहीं उठा सकते क्योंकि कारण तो आता-जाता रहता है। जो अकारण खुश रहते हैं वह साई के भक्त हैं। यानी जो हर काल, हर परिस्थिति और हर माहौल में खुश रह लेते हैं, वो साई के भक्त हैं।

दासगणु महाराज कीर्तन करते थे। ये वो व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपने कीर्तन के ज़रिए बाबा की ख्याति पूरे महाराष्ट्र में फैलाई। एक रोज़ उन्हें प्रेरणा हुई कि ईशावास्य उपनिषद पर टीका करें। टीका यानी कि उसका भावार्थ लिखना। उन्होंने टीका लिखना शुरू किया, लेकिन एक जगह वह अटक गए, तो साई के पास पहुंचे। बोले, बाबा रास्ता दिखाओ। मैं यहां अटक गया हूं, क्या करूं!

यहां बाबा ने एक लीला रची। बाबा ने कहा-तुम मुंबई चले जाओ। काका साहब दीक्षित के घर पर उनकी नौकरानी तुम्हारी समस्या का समाधान कर देगी। महाराज हतप्रभ रह गए। सोचा नौकरानी और मुझे उपनिषद पर ज्ञान देगी? और फिर अहंकार का भाव उनके मन में कुलबुलाने लगा। बाबा अहंकार के हमेशा खिलाफ रहे हैं। उन्होंने समय-समय पर हर किसी का अहंकार तोड़ा है। बाबा ने उनको रास्ता दिखाया, दासगणु महाराज को मानना भी पड़ा। क्या करते? टीका में अटक जो गए थे। कोई चारा भी नहीं था उनके पास। वे मुंबई में काका साहब के यहां पहुंचे। वहां रात भर उनके दिमाग में चिंतन-मनन का दौर चलता रहा। अगले दिन सवेरे-सवेरे जब उनकी नींद टूटी, तो उनके कानों में मीठी वाणी सुनाई दी। जैसे कोई गुनगुना रहा हो। गाने के बोल थे... लाल रंग की साड़ी, जिसकी ज़रीदार किनारी है। दासगणु महाराज जब बाहर गाए, तो देखा कि नौकरानी नाम्या की बहन मलकर्णी। रोज़मर्रा के काम करते हुए बहुत खुश होकर अपनी मस्ती में यह गीत गुनगुनाए जा रही थी।

दासगणु महाराज को उसके कपड़ों की दशा देखकर उस पर दया आ गई और उन्होंने उसे लाल रंग की ज़रीदार साड़ी मंगाकर दे दी। साड़ी मिलते ही वह बड़ी खुश हो गई। उसने बड़ी उत्सुकता से साड़ी पहनी। उसके बाद पूरे दिन उल्लास के साथ घर का कामकाज निपटाया।

अगले दिन दासगणु महाराज ने देखा कि मलकर्णी फिर से वही अपनी फटी-पुरानी साड़ी पहनकर काम पर आई थी। उतनी ही खुशी से वो फिर एक नया गाना गुनगुनाते हुए मस्ती से अपना काम कर रही थी। दासगणु महाराज ने हैरानी से उससे सवाल किया-मैंने जो साड़ी तुम्हें दी थी, उसे पहनकर क्यों नहीं आई, वह कहां रख दी? मलकर्णी ने कहा-रोज़ नई साड़ी पहन कर थोड़े ही आऊंगी। उसे तो मैंने संदूक में रख दिया। बस दासगणु महाराज को अपनी जिज्ञासा का समाधान मिल गया कि खुशी जो है, वो किसी चीज़ पर आधारित नहीं है। जो खुश रहना चाहता है, वो हमेशा खुश रहता है। कहीं भी, किसी भी चीज़ और परिस्थिति में खुशी ढूंढ लेता है। यूं भी कहा जा सकता है कि जो खुश रहना चाहता है उसे खुशी खुद ढूंढते हुए आ जाती है और जो खुशी की तलाश में तनाव पालता है, उसे साक्षात् परमब्रह्म भी खुश नहीं रख सकते। यदि आपकी खुशी किसी चीज़ पर आधारित है, तो आप भगवान में, अपने साई में विश्वास नहीं रखते। यदि किसी चीज़ के मिल जाने पर या खो जाने पर आपकी खुशी आती या जाती है, तो आपकी भक्ति में, विश्वास में कहीं कोई कमी रह गई है।

तब की बात....

बाबा का भक्त था नानावली। उसका असली नाम था शंकर नारायण वैद्य। बाबा के शिरडी में आने से पहले ही वो वहां था। वह कुछ अलग तरह का व्यक्ति था। कुछ कहते थे कि वह सनकी था। कभी वो निर्वस्त्र घूमने लगता, तो कभी अपनी जेब में सांप, बिच्छू रखकर घूमता। हां, नुकसान किसी का नहीं करता था। जब बाबा शिरडी पहुंचे, खंडोबा मंदिर के पास नानावली अचानक कहीं से आ पहुंचा और बोला-आओ मामा। बाबा को उसने मामा बना लिया था।

समय गुज़रता गया। नानावली यूं ही सनक भरी हरकतें करता रहा। उसका एक ही नारा था, बाबा की फौज करेगी मौज। वो खुद को बाबा की सेना का कमांडर यानी सेनापति कहता। शिरडी के लोग मज़े में कहते बाबा का गुंडा है यह।

यह बात उस वक्त की है, जब बाबा की ख्याति खूब हो गई थी और भक्तों की कतारें लगती थी उनके दर के सामने। नानावली अचानक दनदनाते हुए मस्जिद में आ घुसा। जो लोग बाबा के लिए पूजा की थाली लाए थे, वो गिर गई। लोगों के हाथों से बाबा के लिए लाए उपहार भी गिर गए। भक्तों में अफरा-तफरी मच गई। नाना ने बाबा से जाकर कहा-चल उठ, अपने आसन से। मस्जिद में सन्नाटा छा गया। बाबा उठे, तो नानावली खुद बाबा के आसन पर जाकर बैठ गया। बाबा ने कुछ नहीं कहा, बगल में ही खड़े हो गए। नानावली ने प्रश्न किया, क्यूं नवाब कैसे हो? बाबा ने कहा-एकदम मज़े में हूं। नाना ने फिर पूछा-अब दुनिया कैसी लग रही है? बाबा ने कहा, वैसी ही, जैसे पहले लगती थी।

बाबा से यह उत्तर सुनते ही नानावली आसन से उठा और बाबा के कदमों में जा गिरा। फिर वहां से भाग गया। शिरडी वाले कहते हैं कि नानावली के अंदर कोई पहुंची हुई आत्मा थी, जिसने बाबा की परीक्षा लेने के लिए यह प्रपंच रचा था। वह जानना चाहता था कि यदि बाबा को उनके स्थान से हटा दिया जाए, तो क्या वह पहले की तरह ही रहेंगे।

साई से सीधी सीख...

मलकर्णी की साड़ी और नानावली के उदाहरण से यही साबित होता है कि यदि हमारी खुशी किसी कारण पर आश्रित है, तो हम अभी ईश्वर से दूर हैं। इन दोनों ही किस्सों में यह स्पष्ट हो जाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी सहज रहने से ही हमें खुशी का असली आनंद मिल सकता है। खुशी अगर किसी विषय, वस्तु या विचार पर आधारित है तो उनके सरकने से खुशी भी सरक सकती है लेकिन जो अकारण खुश रहते हैं तो विषय, वस्तु या परिस्थितियां उन्हें दुःखी कदापि नहीं कर सकती। बाबा भली कर रहे।

-सुमीत पौंदा
आभार: सबके जीवन में साई बातें एक फकीर की

किसी भी विज्ञापन पर अमल करने से पहले उसकी सत्यता की जांच स्वयं कर लें। प्रकाशक व सम्पादक इसकी प्रमाणिकता के लिए किसी तरह से ज़िम्मेदार नहीं होंगे। विज्ञापन एवं लेखकों की राय से सम्पादकीय का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी व सम्पादक अंजु टंडन ने वीबा प्रैस प्रा. लि., C-66/3, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली से छपवा कर F-44-D, MIG फ्लैटस, G-8 एरिया, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित किया।
RNI No. DELBIL/2005/16236

उदि का गहन तत्वार्थ है-विवेकपूर्ण वैराग्य व नवजीवन

शिरडी से प्रस्थान करते समय जब भक्त बाबा श्री से जाने की आज्ञा मांगने जाते तो बाबा का नियम था कि वे उन्हें उदि देते या जब वे कहते-'उदि लाओ', तब भक्त समझ जाते कि प्रस्थान की आज्ञा मिल गई है तो वे खुशी-खुशी अपने घर लौट जाते। बाबा प्रसाद के रूप में उदि देकर और कुछ उनके मस्तक पर लगा कर अपना वरद-हस्त भक्त के सिर पर रखते। इससे उनकी यात्रा सुखद हो जाती और बिना किसी प्रकार का कष्ट उठाये सकुशल घर पहुंच जाते। स्मरण रहे उस समय यातायात के सुगम रास्ते व साधन नहीं थे। बाबा श्री का ऐसा प्रतिदिन नियम था परन्तु उदि वितरण करने में बाबा का एक उद्देश्य भी था। इससे वे यह शिक्षा देते थे कि यह दिखाई देने वाला ब्रह्माण्ड केवल भस्म (उदि) के समान है। हमारा यह सुन्दर दिखने वाला तन भी ईंधन-सदृश ही है, अर्थात पंच-भूतों से निर्मित है जो एक दिन सांसारिक भोगों के बाद भस्म में बदल जायेगा। तुम सब दिन-रात यह याद रखो। मेरी और तुम्हारी भी यही स्थिति है। यहां किसी का किसी से कोई संबंध नहीं। संसार में कोई किसी का पुत्र, पिता या स्त्री नहीं है। हमारा आपस का मिलना सिर्फ एक ऋणानुबंध है।

यह सर्वविदित है बाबा सबसे दक्षिणा मांगा करते थे, जिसमें से वे ज़रूरतमंदो व कई शिरडीवासियों को दान देते थे। दान के बाद जो कुछ शेष रहता उससे वे लकड़ी मोल लेकर सदैव धुनी प्रज्वलित रखते। इसी से प्राप्त होने वाली अमित भस्म उदि भक्तों में बांट देते। यथार्थ में बाबा श्री भक्तों को दाक्षिणा व उदि द्वारा सत्य व असत्य में विवेक तथा असत्य के त्याग का सिद्धांत समझाते हैं कि इस उदि से वैराग्य और दक्षिणा से त्याग की शिक्षा लो। इन दोनों के अभाव में इस माया रूपी भवसागर को पार करना कठिन है।

'रक्षा-विभूति-उदि यह तीनों अलग शब्द हैं, परन्तु इनका एक ही अर्थ है। यह ऐसा प्रसाद था जिसे बाबा सदैव काफी मात्रा में भक्तों में बांटा करते थे। बाबा जब प्रसन्न-चित्त होते थे, तब वे उदि के संदर्भ में गीत गाते थे 'रमते राम आयोजी आयोजी, उदियां की गोनियां लायोजी।' बाबा श्री की परम कल्याणकारी उदि ऐसी है जो हमें अपने आध्यात्मिक मार्ग की राह दिखाती है तथा सांसारिक लाभ भी दिलाती है। श्री साई सच्चरित्र अध्याय 33-34 में उदि की महिमा का गुणगान है कि किस प्रकार उदि प्राणवर्द्धक है। इनमें एक लीला अद्वितीय है कि एक समय एक पिता को जब सूचना मिली कि उनकी बेटी गांव में प्लेग-ग्रस्त हो गई है और उदि चाहिए। अत: पिता ने नाना साहेब से प्रार्थना करने व उदि भेजने का संदेश भेजा। सूचना देने वाला व्यक्ति नाना को रास्ते में मिला। नाना साहेब के पास भी उस समय उदि नहीं थी अत: उन्होंने सड़क पर से कुछ धूल उठाई और बाबा से सहायता की विनती कर वह धूल अपनी पत्नी के माथे पर लगा दी। जब वह पिता अपने गांव पहुंचा तो देखा पुत्री अब ठीक है। विचार करने पर पता चला कि जिस दिन, जिस समय नाना साहेब ने धूल को उदि की तरह उपयोग किया था ठीक उसी समय से पुत्री के स्वस्थ में सुधार होना शुरू हो गया था। भक्तगण इस लीला से अनुभव मिलता है कि साधारण मिट्टी भी उदि है अगर सत्य में भक्त का साई चरणों में अटल विश्वास हो।

बाबा श्री की उदि रामबाण है। एक विश्वास है कि जब भक्त के पास उदि है, बाबा उनके साथ हैं। उदि जीवन दान है आइये श्रवण करें उदि से संबन्धित कुछ लीलाएं। चिदम्बर केशव गाडगिल, बाबा के परम भक्त थे। अहमदनगर से उनकी तरक्की हो गई और उन्हें तुरंत अपने निर्धारित स्थान पहुंचने को कहा गया। जो रेलगाड़ी उन्होंने पकड़ी वो कोपरगांव से होकर निकल रही थी। जब गाड़ी कोपरगांव स्टेशन पर रूकी, वे दु:खी हो गये कि मैं शिरडी के इतने पास होकर दूर हूं और बाबा के दर्शन नहीं

कर पा रहा हूं। जैसे ही गाड़ी रवाना हुई, एक छोटा सा पैकेट खिड़की से आकर उन पर गिरा। खोला तो देखा उसमें उदि थी। वो पुड़िया उन्होंने संभालकर रख ली। कुछ समय पश्चात् जब वे शिरडी गये, बाबा बोले, तुम आ नहीं पाये इसलिये मैंने उदि की पुड़िया भेजी थी। मिल गई थी न? यह सुन वे प्रेम से श्री चरणों पर नतमस्तक हो गये। वो उदि उन्होंने एक ताबीज़ में डाल ली और सदा अपने रखी। स्मरण रहे- यह बाबा श्री का वचन हैं- मैं पूर्ण रूप से अपने भक्तों के वश में हूं और सदा उनके साथ ही खड़ा रहता हूं। मुश्किल समय में उनकी पुकार का उत्तर देने को सदा तैयार हूं। (साई लीला पत्रिका से)

जिस प्रकार बाबा श्री के वचन ब्रह्मलिखित हैं ठीक इसी प्रकार धूनी माई से निकली उदि नवजीवन है। भक्त के लिये अध्याय नौ में जिस तर्खड परिवार का ज़िक्र है उन माता व पुत्र का नाम श्रीमति सीतादेवी व ज्योतिन्द्र है। विवाह पश्चात् उन्हें भयंकर सिर दर्द का रोग लग गया। इस रोग से छुटकारा पाने हेतु वे बांद्रा के पीर मौलाना साहिब के पास गये। पीर बाबा ने कहा, 'मैं इसमें कोई मदद नहीं कर सकता हूं। शिरडी में मेरे भाई, साई बाबा के पास जाओ, तुम ठीक हो जाओगे। माता व पुत्र ने जब बाबा के श्री चरणों में प्रणाम किया, बाबा बोले, मां आप आ गईं? मेरे भाई ने आपको यहां भेजा है? आपके सिर में भयंकर पीड़ा है? है न? यह कहते हुए बाबा ने हाथ में उदि लेकर, सीता देवी के सिर पर हाथ मारा और कहा, 'माई आज के बाद मृत्यु तक तुम्हारे सिर में दर्द नहीं होगा। महान आश्चर्य, सिर में होने वाला दर्द दूर हो गया और पुन: वे इस रोग से पीड़ित नही हुई। यह बात अत्यंत विचारनीय है कि माता ने अपनी इस बीमारी का ज़िक्र नहीं किया था और बाबा को सब ज्ञात था (तर्खड परिवार के अनुभव पुस्तक से)

चन्द्राबाई बोरकर उन भाग्यशाली भक्तों में से एक हैं जिन्होंने बाबा श्री के अन्तिम समय उनके मुंह में जल डाला था। वे बाबा श्री की परम भक्त थी। एक समय बाबा ने काका साहेब से कहा था यह पिछले सात जन्मों से मेरी बहन है, मैं जहां भी जाता हूं यह मुझे ढूंढ लेती है। सन् 1918 में जब वे बाबा के दर्शनार्थ गई, बाबा ने कहा, तुम्हारे दिल में कोई इच्छा है, मांग लो, वह तुम्हें मिल जायेगी। बाई ने तुरंत कहा, बाबा आप तो अंतर्यामी हैं, आप सब कुछ जानते हैं। यथार्थ में वे निस्संतान थी परन्तु फिर भी उन्होंने बाबा से कुछ नहीं मांगा। इस समय वे 48 वर्ष की थी। परिवारजनों व डॉक्टरों ने कह दिया था कि इस आयु में मां बनना मुश्किल है। परन्तु बाई का साई चरणों में पूरा विश्वास था। पांच महीने बाद उनका पेट बढ़ गया। डॉक्टर ने कहा कि गांठ है, ऑपरेशन करवाओ बाई ने कहा अभी नहीं, पांच माह बाद वे सोचेंगी। इस समय वे 51 वर्ष की थी। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि वे गर्भवती हैं। इस गर्भवस्था के दौरान सिर्फ जल और उदि ही ली। बाबा श्री की कृपा से दिवाली से पहले धनतेरस के दिन उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। सब हैरान थे कि उनका प्रसव आसान हुआ, बिना किसी डॉक्टर व नर्स व बिना किसी दवाई।

साई बंधुओं, इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि उदि आज भी जीवनदायिनी है। अमरावती के डॉक्टर तलवारकर सर्वप्रथम 1917 में शिरडी गये थे, बाद में वे कई बार शिरडी गये। बाबा श्री के वरदहस्त से प्राप्त उदि की वो अपने जीवन की तरह रक्षा करते थे। एक बार एक ऐसा मरीज़ उनके पास आया जो मृत्यु के द्वार पर खड़ा था। यह देख उन्होंने बाबा श्री के चित्र के आगे खड़े होकर कहा, बाबा, इस व्यक्ति ने सब उपचार कर लिये हैं और हार गया है। सिर्फ आप ही इसे बचा सकते हैं। तुरंत ही उन्हें प्रेरणा हुई कि मरीज़ को उदि देनी चाहिए। उन्होंने खाली शीशी में जल व उदि की तीन पुड़ियां बनाकर मरीज़ को यह कहते हुए दी कि हर तीन घंटे में यह दवाई लेना। उसी शाम मरीज़ के परिवारजन ने आकर कहा, मरीज़ अच्छा महसूस कर रहा है। तब डॉक्टर ने सामान्य दवाई दी। कुछ ही दिनों में मरीज़ ठीक हो गया और डॉक्टर के पास आकर बिल के साथ-साथ और कुछ पैसे देने लगा। डॉक्टर ने लेने से मना करते हुए कहा, मैंने तुम्हें नहीं बचाया है, बाबा ने ही तुम्हें बचाया है। मैं तो एक साधन बना हूं। बाबा की उदि ही तुम्हारे काम आई। तुम्हें पश्चात् शिरडी ज़रूर जाना चाहिए। कुछ समय पश्चात् डॉक्टर और मरीज़ एक साथ शिरडी गये। आभारी व्यक्ति ने दान पेटी में बहुत दक्षिण ा डाली, पूजा की और आरती में शामिल हुए। डॉक्टर ने तब कहा, यही हैं साई बाबा जिन्होंने तुम्हें नवजीवन दिया। मेरी दवाइयों ने तुम्हारा इलाज नहीं किया। इनकी कृपा और उदि ने तुम पर कृपा की। यह वाक्या सन् 1937 का है और डॉक्टर को उदि सन् 1917 में बाबा श्री के हाथों प्राप्त हुई थी। (साई लीला पत्रिका)

भक्त शंकरराव अपनी माता के साथ पंढरपुर की तीर्थ यात्रा पर निकले। माता विट्ठल जी के दर्शनों की उत्सुक थी। शिरडी रास्ते में ही था अत: बाबा श्री के दर्शन पश्चात् ही आगे जाने का निर्णय लिया। द्वारकामाई पहुंच कर जैसे ही बाबा के दर्शन किये, बाबा बोले, 'घर जाओ' और माता को उदि की एक पुड़िया दी। माता मन ही मन पंढरपुर न जाने पर उदास हो गई। तभी उन्हें यह स्मरण हुआ कि शिरडी भी पंढरपुर है। घर वापिस पहुंच कर पुड़िया खोली सब आश्चर्यचकित हो गये। उदि की जगह पुड़िया में सुगंधित बुक्का था जो पंढरपुर में भक्तों को मिलता है। शंकरराव ने कहा, मां सचमुच में पंढरपुर तीर्थ करके आई हैं तभी तो बाबा ने पंढरपुर वाला प्रसाद आपको दिया है। (साई लीला पत्रिका)

सुधिजन, श्री हेमाडपंत जी ने बहुत ही सुन्दर लिखा है- बाबा की उदि की शक्ति अपरमपार है। उदि प्रभु शंकर की भी भूषण है और जो विश्वास के साथ उसे माथे पर लगाते हैं उनके मार्ग में आने वाले सभी कष्ट, रूकावटें, उसी क्षण दूर हो जाते हैं। इसके अलावा उदि की एक और विशेषता है कि भक्तिभाव व विश्वास के साथ इसका सेवन करने पर दीर्घ-आयु की प्राप्ति होती है, सभी पापों का नाश होता है, सदा सुख-संतोष की प्राप्ति होती है। मन में उठने वाले कलुषित भाव सदा के लिये समाप्त हो जाते हैं। वैराग्य का भाव जागने से आत्मा पवित्र हो जाती है। जहां कहीं भी श्रद्धापूर्वक साई चरित्र का पठन होता है वहां द्वारकामाई अवश्य होती है। निश्चय ही साई वहां प्रकट होते हैं। जब स्वानंद-घन साई का स्मरण किया जाता है, प्रतिदिन उनके नाम का जप किया जाता है तो किसी अन्य प्रकार के जप-तप-साधन की ज़रूरत नहीं पड़ती है। जो साई की विभूति लगाते हैं, भक्ति-भाव के साथ पीते हैं, उनकी सब इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं। उन्हें धर्मादि चारों प्रकार के पुरूषार्थों की प्राप्ति हो जाती है। प्रबल पाप व सभी छोटे पाप भी उदि के संपर्क में आने से निर्मल हो जाते हैं व उससे अंदर-बाहर निर्मलता आती है। (अध्याय 34-35 महाकाव्य)

संकलन: योगराज मनचंदा

शिरडी साईबाबा संस्थान द्वारा भक्तों के लिए नयी सुविधा

शिरडी: श्री साईबाबा संस्थान के मुख्य कारीकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गडिलकर ने Talk with Sai AI Chatbot का उद्घाटन किया जो साई भक्तों के लिए नई online सुविधा है जिसमें साई भक्तों और पर्यटकों को संस्थान की वेबसाइट पर एक क्लिक से श्री साईबाबा और शिरडी के बारे में सभी महत्वपूर्ण जानकारी मिलेगी। उद्घाटन के अवसर पर उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री भीमराज दरादे, प्रशासनिक अधिकारी श्री संदीप कुमार भोसले, श्रीमती प्रज्ञा महंदुले-सिनरे, श्री विश्वनाथ बजाज, लेखा अधिकारी श्री अविनाश कुलकर्णी, जनसंपर्क अधिकारी श्री तुषार शेलके, आई.टी. विभाग हेड श्री अनिल शिंदे, श्री रमेश पुजारी और श्री संजय गिमे उपस्थित थे। Talk with Sai Chatbot सुविधा से दुनियाभर के भक्तों को श्री साई बाबा के जीवन, शिरडी संस्थान के बारे में, मंदिर के कार्यक्रमों, त्यौहारों व धार्मिक स्थानों के बारे में जानकारी मिलेगी और भक्तों को उनके संदेह और सवालों के उत्तर मिलेंगे। यह सुविधा अंग्रेजी और मराठी में उपलब्ध है और जल्द ही अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में शुरू की जाएगी।

इसके अतिरिक्त श्री साईबाबा संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर जी ने बताया कि भक्तों के अनुरोध पर संस्थान ने यह फैसला लिया है कि साई बाबा की पादुकाएं भक्तों के दर्शन के लिए विभिन्न शहरों में ले जायी जायेंगी। दिनांक 10 अप्रैल से 25 अप्रैल तक बाबा की पादुकाएं संस्थान की टीम ए.सी. बस में लेकर जायेंगे। जहां भी पादुकाएं जायेंगी वहां पर संस्थान की टीम एवं आयोजकों द्वारा सभी प्रबन्ध किये जाऐंगे। श्री गोरक्ष गडिलकर जी ने कहा कि श्री साईबाबा संस्थान हमेशा भक्तों की सेवा के लिए नई सुविधाएं प्रदान करता है।

-**निलेश संकलेचा,** शिरडी

हमें ये बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि अब आप सब साई बाबा की देश विदेश की खबरें, भक्तों के अनुभव, बाबा के अनूठे चमत्कार व बाबा के विभिन्न live कार्यक्रम, श्री साई सुमिरन टाइम्स की YouTube Channel पर भी नि:शुल्क देख सकते हैं। इसके लिए आप सबसे अनुरोध है कि आप सब अपने फोन पर Shri Sai Sumiran Times की YouTube Channel को subscribe करें।

ओम साई राम

तरस गई साई!
अब तो खेल मेरे संग होली!!
सोचा था कभी
ना खेलूंगी
रंगो संग होली
वैराग का
रंग तूने ऐसा
चढ़ाया
मन एक बार
फिर
उमंगों से भर
आया

फिर सावन की बौछारों ने
सावन की मिट्टी सा
सोंधापन पन गुनगुनाया
और सावन के झूलों ने
तुम संग होली मिलन का आनंद पाया।

-**किरण अरोड़ा**

प्रतियोगिता नम्बर 233

नीचे लिखी पंक्तियां श्री साई सच्चरित्र से ली गई हैं, आपको बताना है कि ये कौन से अध्याय से हैं। सही जवाब भेजने वाले को मिलेगा इनाम। अपने जवाब हमें 9818023070 पर whatsapp करें या saisumirantimes@gmail.com पर ई-मेल करें। अपना पता व फोन नंबर अवश्य लिखें।

1. मेरे भक्तों के घर अन्न तथा वस्त्रों का कभी अभाव नहीं होगा।
2. ब्रह्म का दर्शन करने के लिए पांच वस्तुओं का त्याग करना पड़ता है। 1. पांच प्राण 2. पांच इन्द्रियां 3. मन 4. बुद्धि तथा 5. अहंकार ।

पहला ईनाम- कंचन मेहरा के सौजन्य से शिरडी आने जाने की स्लीपर क्लास की दो टिकटें। (शिरडी टिकट तीन महीने तक ही मान्य है)

दूसरा इनाम- साई माऊली ट्रस्ट राजपार्क के सौजन्य से बाबा का वस्त्र।

पिछले माह की प्रतियोगिता के सही उत्तर: 1. अध्याय-11 2. अध्याय-32

सही जवाब भेज कर शिरडी यात्रा की 2 टिकटों (स्लीपर क्लास) का पहला इनाम जीता है जनकपुरी, दिल्ली से सुभाष ने और दूसरा ईनाम जीता है उत्तम नगर, दिल्ली से विक्की गुप्ता ने। आपको जल्द ही ईनाम भेजे जायेंगे।

सम्पादन मण्डल

मुख्य संरक्षक -सी.एल. टिक्कू, स्वामी बलदेव भारती, राकेश जुनेजा, मोती लाल गुप्ता, सुमित पोंदा, पवार काका
मुख्य सलाहकार -स्वामी सत्यानंद महाराज, संदीप सोनवणे, सुरेन्द्र सक्सेना, भरत मेहता, अशोक सक्सैना, सुनील नागपाल, नीरज कुमार, जी.आर. नंदा, अशोक खन्ना, मुकुल नाग, मंजु बवेजा
सलाहकार -महेन्द्र दादू, भीम आनंद, मीता साई, के.बी. शर्मा, के.सी. गुप्ता, नरेश मदान, अमित माथुर, सचिन जैन, सुरेन्द्र सेठी, संदीप अरोड़ा
विशेष सहयोग -अमित सरीन, महेन्द्र शर्मा
सम्पादक -अंजु टंडन
सह सम्पादक -शिवम चोपड़ा
उप सम्पादक -पूनम धवन,
डिज़ाइनर -गायत्री सिंह
कानूनी सलाहकार -प्रेमेन्द्र ओझा
सहयोगी -ज्योति राजन, कृष्णा पुरी, मीरा साव, अंजली, कंचन मेहरा, मीनू सिंगला, साईना पुरी, दिनेश चन्द माथुर, मंजीत, सुनीता सग्गी, ओंकारनाथ अस्थाना, विवेक चोपड़ा, आंचल मारवा, संजय उप्पल, शैली सिंह, किरण, विशाल भाटिया, सुषमा ग्रोवर, गुरबचन सिंग, उषा अरोड़ा, योगेश शर्मा, उषा कोहली, रूपलाल अहूजा, राजीव भाटिया, प्रेम गुलाटी, योगेश बहल, नीलम खेमका, सीमा मेहता, वर्षा शर्मा।

-प्रशासनिक कार्यालय-
F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar,
New Delhi -110064, Ph- 9818023070, 9212395615
(सभी पद अवैतनिक हैं)

साई धाम मंदिर
उप्पल साउथएण्ड कालोनी सैक्टर-49, गुरूग्राम में शुभ कार्यों के लिए 2 हाल एवं 5 कमरे उपलब्ध हैं।
सम्पर्क करें:
श्री अरूण मिश्रा
फोन: 9350858495, 0124-2230021

Publication date- 5th April 2025, Posting date- 9th/10th April 2025, Place of posting- Naraina

SAI UNIVERSITY
CHENNAI

University Grants Commission (UGC) | Bar Council of India | Association of Indian Universities

A university guided by distinguished leaders

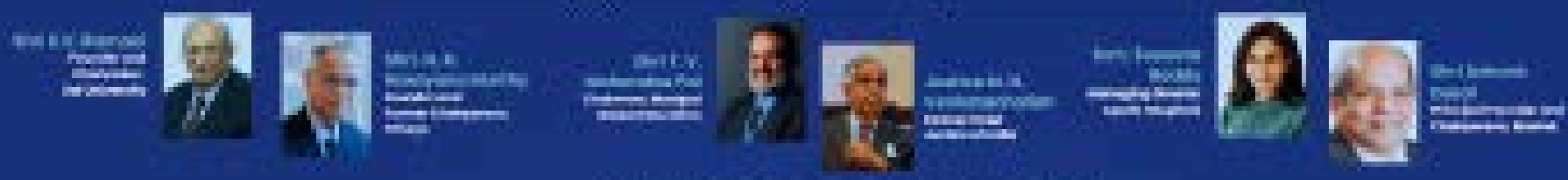

AND OTHER EMINENT LEADERS

INVITING APPLICATIONS FOR UNDERGRADUATE AND POSTGRADUATE PROGRAMS AY 2025-26

SCHOOL OF BUSINESS

BBA (Hons.) 4 years
- Digital Marketing
- Business Intelligence & Data Analytics
- Finance
- Human Resource Management
- International Business

MBA 2 years
- Artificial Intelligence and Business Analytics
- Operations and Project Management (with IPMA Level D Certification)
- Finance | Human Resource Management | Marketing | Strategy | International Business

B.Com (Hons.) 4 years
- ACCA (with 9 paper exemptions)

SCHOOL OF MEDIA

B.Sc. (Hons.) 4 years
- Film and Television Production
- Visual Communication

B.A. (Hons.) 4 years
- Media Studies

SCHOOL OF LAW

- B.A. LL.B. (Hons.) 5 years
- BBA LL.B. (Hons.)* 5 years
- LL.M. 2 year

SCHOOL OF ARTS AND SCIENCES

B.Sc. (Hons.) 4 years
- Biological Sciences
- Psychology
- Cognitive Neuroscience

B.A. (Hons.) 4 years
- Economics
- Politics, Philosophy and Economics (PPE)

SCHOOL OF COMPUTING AND DATA SCIENCE

B.Tech
- Computer Science
- Data Science
- Computing and Data Science
- Computer Science (Artificial Intelligence)

SCHOOL OF ARTIFICIAL INTELLIGENCE

B.Tech 4 years
- Artificial Intelligence

BCA (Hons.) 4 years
- Artificial Intelligence

SCHOOL OF TECHNOLOGY

B.Tech 4 years
- Biotechnology
- Environmental Engineering

Explore at
www.saiuniversity.edu.in

Admissions Helpline
+91 91500 75661 / 62 / 63
www.saiuniversity.edu.in | apply.saiuniversity.edu.in
Follow us on @Sai University

SCAN TO APPLY
Meritorious Scholarships up to
50%*